बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन 100

2026

(कक्षा 10)

संस्कृत

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

पढ़ेगा राजस्थान

बढ़ेगा राजस्थान

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

संयोजक कार्यालय – संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन - 100 मार्गदर्शक

संगीता मानवी

संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चूरू संभाग, चूरू

महेन्द्र सिंह बड़सरा

संभागीय कॉर्डिनेटर, शेखावाटी मिशन 100
संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

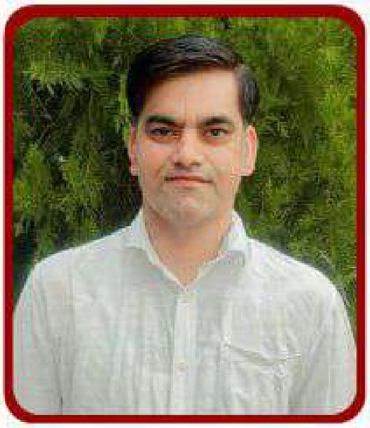

रामावतार भदाला

तकनीकी सहयोगी शेखावाटी मिशन 100

संकलनकर्ता टीम : संस्कृत

संदीप शर्मा

रा.उ.मा.वि. - रुल्याणामाली

नेमा राम

रा.उ.मा.वि. - फतेहपुरा

सुरेश कुमार मीणा

रा.उ.मा.वि. - रामसिंहपुरा

ममता बिजारणियाँ

रा.उ.मा.वि. - बोसाणा

रामकिशन शर्मा

रा.उ.मा.वि. - सिगडोला बड़ा

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

प्रश्नपत्र–योजना 2025–2026

कक्षा : दशमी (माध्यमिकः)
विषय : संस्कृतम् (तृतीयभाषा)
अवधि : 3 घण्टे 15 मिनट (सपादहोरात्रयम्) पूर्णांकाः–80

1. उद्देश्यानाम् अंकभारः –

क्र.सं.	उद्देश्यम्	अंकभारः	प्रतिशतम्
1.	ज्ञानम्	23	28.75
2.	अवबोधः	30	37.50
3.	ज्ञानोपयोगः	09	11.25
4.	कौशलम्	13	16.25
5.	विश्लेषणम्	05	6.25
	योगः	80	100

2. प्रश्नानां प्रकारानुसारम् अंकभारः –

क्र. सं.	प्रश्नानां प्रकाराः	प्रश्नानां संख्याः	प्रतिप्रश्नम् अंकाः	कुलांकाः	प्रतिशतम् अंकानाम्	प्रश्नानां प्रतिशतम्	सम्भावितः समयः
1.	बहुविकल्पात्मकप्रश्नाः	18	1	18	22.50	32.14	25 निमेषाः
2.	रिक्तस्थानम्	06	1	06	7.50	10.71	15 निमेषाः
3.	अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नाः	17	1	17	21.25	30.36	40 निमेषाः
4.	लघूत्तरात्मकप्रश्नाः	09	2	18	22.50	16.07	40 निमेषाः
5.	दीर्घोत्तरीयप्रश्नाः	03	3	09	11.25	5.36	30 निमेषाः
6.	निबन्धात्मकप्रश्नाः	03	4	12	15.00	5.36	45 निमेषाः
	योगः	56		80	100	100	195 निमेषाः

3. विषयवस्तूनाम् अंकभारः –

क्र.सं.	विषयवस्तु	अंकभारः	प्रतिप्रश्नम् अंकाः
1.	अपठितावबोधनम्	08	10.00
2.	रचनात्मककार्यम्	15	18.75
3.	अनुप्रयुक्तव्याकरणम्	24	30.00
4.	पठितावबोधनम्	33	41.25
	योगः	80	100

BSER

प्रश्न–पत्रस्य नीलपत्रम् (ब्ल्यू प्रिन्ट)

कक्षा–माध्यमिकः कक्षा–दशमी | विषयः – संस्कृतम् | पूर्णांकाः – 80 अङ्काः

क्र. सं.	उद्देश्यविधाः / उपविधाः	ज्ञानम्						अवबोधः						ज्ञानोपयोगः / अभिव्यक्तिः						कौशलम् / मौलिकता						विश्लेषणम्						योगः
		बहुविकल्प. प्रश्नाः	रिक्तस्थानम्	अति. लघु.	लघूत्तरात्मकः	दीर्घोत्तरीयः	निबन्धात्मकः	बहुविकल्प. प्रश्नाः	रिक्तस्थानम्	अति. लघु.	लघूत्तरात्मकः	दीर्घोत्तरीयः	निबन्धात्मकः	बहुविकल्प. प्रश्नाः	रिक्तस्थानम्	अति. लघु.	लघूत्तरात्मकः	दीर्घोत्तरीयः	निबन्धात्मकः	बहुविकल्प. प्रश्नाः	रिक्तस्थानम्	अति. लघु.	लघूत्तरात्मकः	दीर्घोत्तरीयः	निबन्धात्मकः	बहुविकल्प. प्रश्नाः	रिक्तस्थानम्	अति. लघु.	लघूत्तरात्मकः	दीर्घोत्तरीयः	निबन्धात्मकः	
1.	अपठित–अवबोधनम्									1(3)	2(1)					1(2)												1(1)				8(7)
2.	रचनात्मककार्यम्											3(1)							2(1)						4(2)						2(-)	15(4)
3.	अनुप्रयुक्तं–व्याकरणम्	1(8)	1(3)	1(2)	2(1)				1(3)		2(1)						2(1)									1(2)						24(21)
4.	पठित–अवबोधनम्	1(8)								1(9)	2(4)							3(1)					2(1)	3(1)								33(24)
	योगः	16(16)	3(3)	2(2)	2(1)				3(3)	12(12)	12(6)	3(1)				2(2)	2(1)	3(1)	2(1)				2(1)	3(1)	8(2)	2(2)		1(1)			2(-)	80(56)
	सर्वयोगः	**23(22)**						**30(22)**						**9(5)**						**13(4)**						**5(3)**						**80(56)**

विकल्पयोजना : – प्रश्न संख्या एकादशात् (11) अष्टादशः (18) पर्यन्तः आन्तरिक विकल्पानि सन्ति।

अवधेयम्–कोष्ठकात् बहिः संख्या अंकबोधिका आन्तरिकसंख्या च प्रश्नबोधिका।

विशेष :- उक्त ब्ल्यू प्रिन्ट मॉडल प्रश्न पत्र का है जो प्रश्नों के प्रकारों को समझने की सुविधा मात्र के लिए है। मूल प्रश्न पत्र का ब्ल्यू प्रिन्ट भिन्न हो सकता है

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन 100

2026

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट PDF डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

पढ़ेगा राजस्थान बढ़ेगा राजस्थान

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

SHEKHAWATI MISSION-100 : 2025-26

बहुविकल्पात्मक प्रश्नाः

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः–

प्र:1 'शुचिपर्यावरणम् इति पाठः कस्मात् ग्रन्थात् संकलितः ?

(अ) लसल्लतिकातः (ब) सामवेद संहितातः (स) चरकसंहितातः (द) ऋग्वेदसंहितातः (अ)

प्र:2 'शुचिपर्यावरणम्' इति पाठरस्य लेखकः कः?

(अ) हरिदत्त शर्मा (ब) महावीरप्रसादः (स) नवलकिशोरः (द) कलानाथः (अ)

प्र:3 केषां माला रमणीया?

(अ) ललितलतानाम् (ब) पुष्पाणाम् (स) मौक्तिकानाम् (द) रूप्यकाणाम् (अ)

प्र:4 अत्र जीवितं कीदृशं जातम् ?

(अ) सरलम् (ब) सुखदम् (स) उन्नतम् (द) दुर्वहम् (द)

प्र:5 मनः शोषयत् तनुः पेषयत् किम् भ्रमति?

(अ) पृथ्वी (ब) सूर्यः (स) कालायसचक्रम् (द) चन्द्रमा (स)

प्र:6 का रसालं मिलिता?

(अ) कुसुमावलिः (ब) भ्रमरपंक्ति (स) नवमालिका (द) चटका (स)

प्र:7 मनुष्याणां शरीरस्यः महान् रिपुः कः?

(अ) आलस्यम् (ब) बलम् (स) स्फूर्तिः (द) श्रमः (अ)

प्र:8 उद्यमेन समः किं नास्ति?

(अ) धनम् (ब) शत्रुः (स) बन्धुः (द) रुपम् (स)

प्र:9 गुणी किं वेति?

(अ) गुणं (ब) निर्बल (स) निर्गुणो (द) वायसः (अ)

प्र:10 कः न परितोषणीय?

(अ) धनवान् (ब) मत्तः (स) क्रुद्धः (द) अकारण द्वेषि (द)

प्र:11 कः सम्पत्तौ विपत्तौ च एकरूपता भवति?

(अ) विदुषाम् (ब) महताम् (स) धनिकानां (द) सज्जनानाम् (ब)

प्र:12 पिककाकयोः भेदः कदा दृश्यते?

(अ) वसन्तसमये (ब) रात्रौ (स) ग्रीष्मकाले (द) वर्षाकाले (अ)

प्र:13 'तिरुक्कुरलं' इति ग्रन्थः मूलतः कस्यां भाषायां रचितः?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) आग्लभाषायां (ब) तमिलभाषायां (स) संस्कृतभाषायां (द) उर्दू भाषयां (ब)

प्र:14 मूर्खः कीदृशं फलम् भुक्ते?

(अ) अपक्वम् (ब) मधुरम् (स) पक्वम् (द) कठोरम् (अ)

प्र:15 लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्तः के प्रकीर्तिताः?

(अ) विद्वांसः (ब) नृपाः (स) धनिका (द) नराणां (अ)

प्र:16 पित्ता पुत्राय बाल्ये ददाति –

(अ) धनम् (ब) सहयोगम् (स) विद्याधनम् (द) परामर्शम् (स)

प्र:17 प्राणेभ्योऽपि विशेषतः कः रक्षणीयः?

(अ) सदाचारः (ब) प्राणः (स) धनम् (द) विद्याधनम् (अ)

प्र:18 वाक्पटुः मंत्री कैः न परिभूयते?

(अ) मित्रैः (ब) परैः (स) मूर्खैः (द) न कोऽपि (ब)

प्र:19 सरसः शोभा केन भवति?

(अ) हंसैः (ब) कमलैः (स) राजहंसेन (द) खगैः (स)

प्र:20 चातकः कम् याचते–

(अ) मेघान् (ब) पुरन्दरम् (स) देवान् (द) नक्षत्रान् (ब)

प्र:21 अम्भोदाः कुत्र सन्ति?

(अ) गगने (ब) वने (स) वसुधां (द) तरोः (अ)

प्र:22 रसालमुकुलानि के समाश्रयन्ते ?

(अ) भ्रमराः (ब) पतग्ड़ा (स) चातक (द) मीनः (अ)

प्र:23 कीदृशं वचः मा ब्रूहिः?

(अ) दीनं (ब) विद्वास् (स) शत्रु (द) सज्जनानाम् (अ)

प्र:24 वने कः वसति?

(अ) खगः (ब) चातकः (स) अश्वः (द) सिंहः (ब)

प्र:25 विमूढधीः कीदृशीं वाचं परित्यजति?

(अ) धर्मप्रदाम् (ब) परूषाम् (स) कठोरम् (द) सुकोमलम् (ब)

प्र:26 अविचलः ध्यानमग्नः स्थितप्रज्ञः कः?

(अ) काकः (ब) मयूरः (स) वानरः (द) बकः (द)

प्र:27 पिता कस्य रुग्णतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः ?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) पितामहस्य (ब) तनूजस्य (स) न्यायधीशस्य (ड) आरक्षीजनस्य (ब)

प्र:28 'जननी तुल्यवत्सला' इति पाठः मूलतः कस्मात् ग्रन्थाद उद्धृतः ?

(अ) रामायणात् (ब) रघुवंशात् (स) कादम्बार्या (द) महाभारतात् (द)

प्र:29 वस्तुतः चौरः कः आसीत् ?

(अ) आरक्षी (ब) बालेयाति (स) गृही (द) न्यायाधीशः (अ)

प्र:30 समग्रविश्वैः कैः आतंकितः दृश्यते?

(अ) शस्त्रः (ब) धनिकै (स) असुरै (द) भूकम्पैः (द)

प्र:31 लवकुशयोः वंशस्य कर्ता कः?

(अ) वशिष्ठः (ब) हरिश्चन्द्रः (स) चन्द्रः (द) सूर्यः (द)

प्र:32 वयोऽनुरोधात् कः लालनीयः भवति ?

(अ) पुत्रः (ब) पिता (स) शिशुजनः (द) मित्रम् (स)

प्र:33 कस्य समक्षमद्यपि मानवः वामनकल्प एव?

(अ) भूकम्पस्य (ब) समुद्रस्य (स) भगवतः (द) प्रकृतेः (द)

प्र:34 बुद्धिमती गहनकानने कं ददर्श ?

(अ) सिंहम् (ब) चौरम् (स) वानरम् (द) व्याघ्रम् (द)

प्र:35 कः वातावरणं कर्कशध्वनिना आकुलीकरोति?

(अ) काकः (ब) पिकः (स) मयूरः (द) बकः (अ)

प्र:36 वानरः कस्य पुच्छं धुनोति?

(अ) पिकस्य (ब) काकस्य (स) सिहंस्य (द) मयूरस्य (स)

प्र:37 कृशकायः कः आसीत्?

(अ) न्यायाधीशः (ब) आरक्षी (स) अभियुक्तः (द) रक्षापुरूषः (स)

प्र:38 गुर्जरराज्ये कदा भूकम्पविभीषिका समुत्पन्ना ?

(अ) 2000 ई. वर्षे (ब) 2001 ई. वर्षे (स) 2005 ई. वर्षे (द) 2010 ई. वर्षे (ब)

प्र:39 राजपुत्रस्य किन्नाम आसीत् ?

(अ) मानसिंहः (ब) देवसिंहः (स) राजसिंहः (द) अमरसिंहः (स)

प्र:40 वयोऽनुरोधात् कः लालनीयः भवति?

(अ) नृपपुत्रः (ब) शिशुजनः (अ) पिता (द) मित्रम् (ब)

प्र:41 'बुद्धिर्बलवती सदा' इति पाठः कस्मात ग्रन्थात् संकलितः?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) काकल्याः (ब) कथा (स) शुकसप्ततेः (द) लसल्लतिकायाः (स)

प्र:42 वृषभः कुत्र पपात?

(अ) भूमौ (ब) आकाशे (स) जले (द) न कुत्रापि (अ)

प्र:43 लोके महतो भयात् कः मुच्यते ?

(अ) धनिकः (ब) बलवान् (स) धूर्तः (द) बुद्धिमान् (द)

प्र:44 किं कृत्वा मनुष्यः नावसीदति ?

(अ) युद्धम (ब) धनार्जम (स) तपः (द) उद्यमं (द)

प्र:45 के अम्बरपथम् आपेदिरे?

(अ) जनाः (ब) वानराः (स) ताराः (द) पतंगाः (द)

प्र:46 प्रजासुखे कस्य सुखम् ?

(अ) राज्ञः (ब) मित्रस्य (स) पितुः (द) मातुः (अ)

प्र:47 सरसः शोभा केन भवति ?

(अ) बकेन (ब) गजेन (स) मकरेण (द) राजहंसेन (द)

प्र:48 'विचित्रः साक्षी' इति पाठः केन विरचितः?

(अ) ओमप्रकाश ठाकुरेण (ब) हरिदत्तशर्मण (स) सुश्रुतेन (द) कालिदत्सेनं (अ)

प्र:49 दुर्बलः वृषभः कुत्र पपात् ?

(अ) वने (ब) गृहे (स) ग्राम (द) क्षेत्रे (द)

अधोलिखित श्लोकस्य हिन्दीभाषायां सप्रसङ्ग भावार्थ लिखत ।

गुणी गुणं वेति न वेत्ति निर्गुणो,
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्वलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः,
करी च सिंहस्य बलं न मूषक :।।

प्र:1 कज्जलमलिनं धुमं मुञ्चति शतशकटीयानम्।
वाष्पयानमाला सन्धावति वितरन्ती ध्वानम्।।
यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः, कठिनं संसरणम्।
शुचि............... ।।1।।

शेखावाटी मिशन-100

प्रसंगः–

यह पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी द्वितीय भाग' के 'शुचि पर्यावरणम्' नामक पाठ से लिया गया है। यह पाठ प्रो. हरिदत्त शर्मा द्वारा रचित 'लसल्लतिका' गीति–संग्रह से संकलित है।

भावार्थः–

सैकड़ो मोटरगाडियाँ काजल–सा मलिन धुआँ अर्थात् काला–काला धुआँ छोड़ती है। शोर करती हुई रेलगाड़ियों की पंक्तिः निरन्तर दौड़ रही है। वाहनों की पंक्तियाँ असीमित (अन्त न होने वाली) हैं इसलिए (रास्ते में) चलना भी कठिन हो गया है। अतः शुद्ध पर्यावरण की शरण में चलना चाहिए।

प्रः2 प्रस्तरतले लतातरुगुल्मा नो भवन्तु पिष्टाः।
पाषाणी सभ्यता निसर्गे स्यान्न समाविष्टा ।।
मानवाय जीवनं कामये नो जीवन्मरणम्।
शुचि............... ।।2।।

प्रसंग – यह पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी द्वितीय भाग' के 'शुचि पर्यावरणम्' नामक पाठ से लिया गया है। यह पाठ प्रो. हरिदत्त शर्मा द्वारा रचित 'लसल्लतिका' गीति–संग्रह से संकलित है। इस पाठ में कवि भारतीय संरक्षण के आधार पर कहता है।

भावार्थः–

लता, वृक्ष और झाड़ियाँ पत्थरों के नीचे नष्ट नहीं होनी चाहिए। अर्थात् पाषाणकालीन सभ्यता प्रकृति में समाविष्ट नहीं होनी चाहिए। मैं मानव के जीवन की कामना करता हूँ, जीवन के नष्ट होने की नहीं। अतः शुद्ध पर्यावरण की शरण में जाना चाहिए।

प्रः3 सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
यदि दैवात् फलं नास्ति, छाया केन निवार्यते ।।3।।

प्रसंगः–

यह श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी द्वितीय भाग' के 'सुभाषितानि' नामक पाठ से लिया गया है यह श्लोक भर्तृहरि के नीति शतक से संकलित है। इस श्लोक में कवि महावृक्ष के बहाने से कहता है। कि मनुष्य को महापुरूषों की सेवा करनी चाहिए क्योंकि वह हित ही करता है।

भावार्थः–

फलों और छाया से युक्त विशाल पेड़ का ही आश्रय लेना चाहिए, भाग्य से यदि फल (परिणाम) न मिले तो

शेखावाटी मिशन–100

छाया को कौन रोक सकता है। अर्थात् छाया तो मिलती ही है।

प्रः4 विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम्।

अश्वश्चेद् धावने वीरः भारस्य वहने खरः ।।4।।

प्रसंग–

यह श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी द्वितीय भाग' के 'सुभाषितानि' नामक पाठ से लिया गया है यह श्लोक भर्तृहरि के नीति शतक से संकलित है। इस श्लोक में कवि कहता है कि इस संसार में कुछ भी निरर्थक नहीं है।

भावार्थः–

इस अद्भुत संसार में निश्चित ही कुछ भी अनुपयोगी नहीं है। घोड़ा यदि दौडने की कला में कुशल (योग्य) है। तो गधा भार ढोने में योग्य होता है।.

प्रः5 विद्वांस एव लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।

अन्येषां वदने ये तु चक्षुर्नामनी मते ।।5।।

प्रसंग–

यह श्लोक हमारी पाठयपुस्तक 'शेमुषी द्वितीय भाग' के 'सूक्तयः' नामक पाठ से लिया गया है। यह पाठ मूलतः कवि तिरुवल्लुवर कृत 'तिरक्कुरल' के संस्कृत अनुवाद से संकलित है इस पद्य में कवि ने विद्वानों को ही नेत्रों वाला बताया गया है।

भावार्थः–

विद्वान लोगो को ही इस लोक में आँखों वाला कहा गया है। अन्य के मुख (आनन) पर जो आँखे होती है। वे तो नाम की आँखे मानी गई है।

प्रः6 एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्।

न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना ।।6।।

प्रसंगः–

यह श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमूषी द्वितीय भाग' के 'अन्योक्तय': नामक पाठ से लिया गया है। यह श्लोक पण्डितराज जगन्नाथ कृत 'भामिनी विलास' ग्रन्थ से संकलित है। इस श्लोक में कवि सज्जन–दुर्जन का भेद वर्णन करते है।

भावार्थः–

एक राजहंस से तालाब की जो शोभा होती है। वह शोभा चारों और किनारे पर रहने वाले हजारों बगुलों भी नहीं होती।

शेखावाटी मिशन–100

पठित् पद्यांश प्रश्नोत्तराणि

प्र:1 अधोलिखित श्लोकं पठित्वा एतादाधारित प्रश्नानम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत।

(1) दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम्।

शुचि–पर्यावरणम् ।।

महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम्।।

मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम ।।

दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम् ।।

शुचि .... ।। 1 ।।

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उत्तरत –

(i) कुत्र दुर्वह्म जीवितम्? उत्तर– लोके या (संसारः) या जगत्

(ii) अनिशं किं चलति? उत्तर– कालायसचक्रम

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) अत्र जीवितं कीदृशं जातम्? उत्तर– अत्र जीवित दुर्वहं जातम्।

(ii) कालायसचक्रं किं किं करोति? उत्तर–कालायसचक्रं, मनुः शोषयत, तनुः पेषयत् सदा वक्रम भ्रमति।

(ग) भाषिक कार्यम्

(i) दशनैः इति पदस्य विशेषणं लिखत। उत्तर– दुर्दान्तैः

(ii) 'भ्रमति सदा वक्रम्' अत्र किं क्रियापदम? उत्तर– भ्रमति

2. अयि चल बन्धो। खगकुलकलरव गुञ्जितवनदेशम्।

पुर–कलरव सम्भ्रमितजनेभ्यो धृतसुखसन्देशम् ।।

चाकचिक्यजालं नो कुर्याज्जीवितरसहरणम्।

शुचि................. ।। 2 ।।

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उत्तरत–

(i) वनदेशं केन गुञ्जितम्? उत्तर– खगकुलकलरवेण।

(ii) अत्र केभ्यः सुख सन्देशम् ? उत्तर– जनेभ्यः सुख सन्देश धृत।

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) कविः कीदृशं देशं गन्तुम् इच्छति? उत्तर– कविः खगकुलकलरव––गुञ्जितवनदेशं चलितुं इच्छति।

(ii) कि जीवतरसहरणम्? उत्तर– पुर–कलरवेण सम्भ्रमितजनेभ्यो च सुखसंदेशं धृतम।

(ग) भाविक कार्यम–

(i) 'अयि चल बन्धो' अत्र किं क्रियापदम् ? उत्तर– चल

(ii) 'वनदेशम्' इति पदस्य विशेषणपदं लिखत? उत्तर– गुञ्जित्

3. **गुणी गुणं वेत्ति न वेति निर्गुणो,**
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः
करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ।।

प्रश्नाः–

(क) एक पदेन उत्तरत –

(i) कः गुणं वेत्ति? उत्तर– गुणी

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) गजः कस्य बलं जानाति? उत्तर–गजः सिंहस्य बलं जानाति।

(ii) निर्बलः च किं न जानाति? उत्तर– निर्बलः च बलं न जानाति ।

(ग) भाषिक कार्यम्–

(i) 'गुणी' इति कर्तृपदस्य क्रियापद किम ? उत्तर– वेत्ति

(ii) 'गुण वेति' इत्यत्र 'वेत्ति' क्रियायाः कर्तृपदं श्लोके किम अस्ति? उत्तर– गुणी

4. **भुक्ता मृणालपटली भवता निपीता–**
न्यम्बूनि यत्र नलिनानि निषेवितानी।
रे राजहंस! वद तस्य सरोवरस्य,
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः।।

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उतरत–

(i) राजहंसेन कानि निपीतानि? उतर– अम्बूनि

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) राजहंसेन सरोवरस्य का भुक्ता? उत्तर– राजहंसेन सरोवरस्य मृगालपटली भुक्ता

(ii) सःकस्य कृतोपकारकः भवति ? उत्तर– सः सरोवरस्य कृतोपकारकः भवति।

(ग) भाषिक कार्यम् –

(i) 'निपीतानि' इति क्रियापदस्य अन्वयः केन पदेन सह वर्तते। उत्तर– अम्बूनि

(ii) 'भवता' इति सर्वनामपदस्थाने संज्ञा पदं लिखत? उत्तर– राजहंसेन

5. रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र क्षणं श्रूयता–

मम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।

केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा,

यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ।।

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कविः मित्रम्' इति शब्देन कं सम्बोधयति? उत्तर– चातकं

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) गगने सर्वे मेघाः कीदृशाः न सन्ति? उत्तर– गगने सर्वे मेघाः जलदायकाः न सन्ति।

(ii) कस्य पुरतः दीनं वचः न ब्रूयात् ? उत्तर– यं यं पश्यसि तस्य पुरतः दीनं वचः मा ब्रूहि।

(ग) भाषिक कार्यम् –

(i) 'सन्ति' इति क्रियापदस्य पद्यांशे कर्तृपदं किम् ? उत्तर– अम्भोदाः

(ii) 'वचः' इति विशेष्यपदस्य पद्यांशे विशेषणपदं किम्? उत्तर– दीनम्

6. **निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति, ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति।**

अकारणद्वेषि मनस्तु यस्य वै, कथं जनस्तं परितोषयिष्यति।।

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उत्तरत –

(i) मनुष्यः किम् उद्दिश्य प्रकुप्यति? उत्तर–निमित्तम

(ii) प्रकोपे अपगमे मनुष्यः किं अनुभवति ? उत्तर– ध्रुवम् प्रसीदति

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) मनुष्यः कदा प्रसीदति? उत्तर– सः तस्य अपगमे ध्रुवं प्रसीदति।

(ii) अकारणद्वेषि, मनुष्यः किं न अनुभवति? उत्तर– अकारणद्वेषि, मनुष्यः कदापि न परितोषतियिष्यति।

(ग) भाषिक कार्यम्–

शेखावाटी मिशन–100

(i) 'कारणम्' इत्यर्थे श्लोके विलोम पदं किं प्रयुक्तम्? उत्तर– अकारणम्

(ii) 'प्रक्रुप्यति' क्रियापदस्य कर्ता कः? उत्तर–मनुष्यः (जनः)

श्लोक

मृगा मृगैः सग्ड़मनुब्रजन्ति,
गावश्च गोभिः तुरगास्तुरगैड्ः।
मुर्खाश्च मूर्खो सुधियः सुधीभिः,
समान–शील–व्यसनेषुसख्यम्।।

प्रश्न– (क) एकपदेन उत्तरत –

(i) मृगाः केः सङ्गमनुब्रजन्ति? उत्तर– मृगैः।

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) सख्यं केषु भवति? उत्तर– संख्यं समान–शील–व्यसनेषु भवति।

(ii) मूर्खाः कैः सङ्गम अनुगछन्ति? उत्तर– मूर्खाः च मूर्खैः सह अनुगछन्ति।

(ग) भाषिक कार्यम्–

(i) 'मृगाः' इति कर्तृपदस्य श्लोके क्रियापदं किम्? उत्तर–अनुव्रजान्ति

(ii) '.................. मूर्खैः सगड़्मनुव्रजन्ति। अत्र उचितं कर्तृपदं किम्? उत्तर– मूर्खाः

शेखावाटी मिशन–100

1. **आपेदिरेऽम्बरपथं परितः पतङ्गाः,**
भृङ्गा रसालमुकु – लानि समाश्रयन्ते।
सकोणचमञ्चति सरस्त्वयि दीनदीनो,
मीनो नु हन्त कतमां गतिमभ्युपैतु ।।

प्रश्न–

(क) एकपदेन उत्तरत –

(i) सङ्कुचिते सरोवरे परितः अम्बरपथं कः आपेदिरे?

(ii) रसालमुकुलानि के समाश्रयन्ते?

उत्तर–

(क) (i) पतंगाः (ii) भङ्गाः

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) सरोवरे सङ्कुचिते भृङ्गाः कानि समाश्रयन्ते?

(ii) सङ्कुचिते सरोवरे पतंगाः कुत्र आपेदिरे ?

उत्तर–

(i) सरोवरे सक्डुचिते भृड़गाः, रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते।

(ii) सक्ड़चिते सरोवरे पतंगाः अम्बरपथं आपेदिरे।

(ग) भाषिक कार्यम–

(i) 'आपेदिरे' इत्यस्य क्रियापदस्य कर्ता कः। उत्तर– पतंगाः

(ii) 'सरस्त्वयि' अत्र 'त्वयि' सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम ? उत्तर–सरः

अद्योलिखित गद्यांश पठित्वा एतद आधारित पश्नाम् उतराणि यथा निर्देशन लिखत–

1. इयमासीत् भैरवविभीषिका कच्छ भुकप्पस्य। पञ्चोत्तर –द्विसहस्त्रखीष्टाब्दे (2005 ईस्वीये वर्ष) अपि कश्मीरप्रान्ते पाकिस्तानदेशे च धरायाः महत्कम्पनं जातम्। यस्मात्कारणात् लक्षपरिमिताः जनाः अकालकालकवलिताः। पृथ्वी कस्माव्प्रकम्पते वैज्ञानिकाः इति विषये कथयन्ति यत पृथिव्या अन्तर्गभे विद्यामानाः बृहत्यः पाषाण–शिला यदा संघर्षणवशात् त्रुट्यन्ति तदा जायते भीषणं संस्खलनम्, संस्खलनजन्यं कम्पनञ्च। तदैव भयावहकम्पनं धराया उपरितलमप्यागत्य महाकम्पनं जनयति येन महाविनाशदृश्यं समुत्पद्यते

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत

(i) इयं कस्य भैरवविभीषिका आसीत्?

उत्तरम् = कच्छभूकम्पस्य।

(ii) कस्मिन् वर्षे पाकिस्तानदेशे भूकम्पनं जातम्?

उत्तरम् = 2005 ई. वर्षे।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) पृथिव्याः अन्तर्गर्भे का विघमानाः सन्ति?

उत्तरम् = पृथिव्याः अन्तर्गर्भे बृहत्यः पाषाणशिलाः विद्यमानाः सन्ति।

(ii) धरायाः महाकम्पनेन किम् समुत्पद्यते?

उत्तरम् = धरायाः महाकम्पनेन महाविनाशदृश्यं समुत्पद्यते।

प्रश्नाः– (ग) भाषिककार्यम

(i) 'पाषाणशिला' इति विशेष्यपदस्य विशेषणपदं किम्?

शेखावाटी मिशन–100

उत्तरम् = बृहत्यः।

(ii) 'कथयन्ति' इति क्रियायाः गद्यांशे कर्तृपदं किमस्ति?

उत्तरम् = वैज्ञानिकाः।

2. विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्रौ तस्मिन् गृहे कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तर प्रविष्टः। तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायितः। चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धो चौर शङ्क्या तमन्वधावत् अगृहणाच्च, परं विचित्रमघटत। चौरः एव उच्चैः क्रोशितुमारभत ''चौरोऽयं चौरोऽयम्'' इति। तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धाः ग्रामवासिनः स्वगृहाद, निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकमतिथिमेव च चौरं मत्वाऽभर्त्सयन्। यद्यपि ग्रामस्य आरक्षी एव चौर आसीत्। तत्क्षणमेव रक्षापुरुषः तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्।

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कीदृशी दैवगतिः?

उत्तरम् = विचित्रा।

(ii) ग्रामवासिनः कम् चौरं मत्वाऽभर्त्सयन?

उत्तरम् = अतिथिम्।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) चौरः उच्चैः क्रोशितुं किम् आरभत?

उत्तरम् = चौरः उच्चैः क्रोशितुम् आरभत– ''चौरोऽयम् चौरोऽयम्'' इति।

(ii) रक्षापुरुषः अतिथिं किम प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्?

उत्तरम् = रक्षापुरुषः अतिथिं 'चौरोऽयम्' इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्।

प्रश्नाः– (ग) भाषिककार्यम्–

(i) ''विचित्रा दैवगतिः'' अत्र विशेषण पदं लिखत।

उत्तरम् = विचित्रा।

(ii) ''ग्रामवासिनः स्वगृहात् निष्क्रम्य तत्रागच्छन्'' अत्र 'आगच्छन्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं लिखत।

उत्तरम् = ग्रामवासिनः।

3. कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वितुमपार्जितवान्। तेन स्वपुत्र एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः सम भूत्। एकदा स पिता तनूजस्य रुग्णतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः पुत्रं द्रष्टुं च प्रस्थितः। परमर्थकार्श्येन पीडितः स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।

पदातिक्रमेण संचलन् सायं समयऽप्यसौ गन्तव्याद् दूरे आंसीत्। निशान्धकारे प्रसृते विजने प्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा। एवं विचार्य स पार्श्वस्थिते ग्रामे रात्रिनिवासं कर्त्तुं कञ्चिद् गृहस्थमुपागतः। करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।

शेखावाटी मिशन 100

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत्–

(i) निशान्धकारे प्रसृते कुत्र पदयात्रा न शुभावहा?

उत्तरम् = विजने प्रदेशे।

(ii) भूरि परिश्रम्य कः किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्?

उत्तरम् = निर्धनः जनः।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) निर्धनः जनः किमर्थं व्याकुलो जातः?

उत्तरम् = निर्धनः जनः स्वपुत्रस्य रुग्णतामाकर्य व्याकुलो जातः।

(ii) निर्धनः जनः स्वपुत्रं कुत्र प्रवेशं दापयितु सफलो जातः?

उत्तरम् = निर्धनः जनः एकस्मिन् महाविद्यालये स्वपुत्रं प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः

प्रश्नाः– भाषिककार्यम्–

(i) ''तेन स्वपुत्रं एकस्मिन्................''. अत्र 'तेन' इति सर्वनाम स्थाने संज्ञापद प्रयोग कुरुत।

उत्तरम् = निर्धनजनेन।

(ii) ''स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।'' अत्र 'स' इति कर्तापदस्य क्रियापदं लिखत।

उत्तरम् = प्राचलत्।

4. आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्। तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादित देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ। आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत्, अभियुक्तश्च अतीव कृशकायः। भारवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करम् आसीत्। स भारवेदनया क्रन्दति स्म। तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच– ''रे दुष्ट! तस्मिन् दिने त्वयाऽहं चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणाद् वारितः– इदानीं निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे'' इति प्रोच्य उच्चैः अहसत्। यथाकथञ्चिद् उभौ शवमानीय एकस्मिन् चत्वरे स्थापितवन्तौ।

प्रश्नाः– एकपदेन उत्तरत–

(i) कः सुपुष्टदेह आसीत्?

उत्तरम् = आरक्षी।

(ii) कः अतीव कृशकायः आसीत?

उत्तरम् = अभियुक्तः।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) तौ पटाच्छादित देहं स्कन्धेन वहन्तौ कं प्रति प्रस्थितौ?

उत्तरम् = तौ पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ।

शेखावाटी मिशन

(ii) चौर्याभियोगे सः किं लप्स्यते।

उत्तरम् = चौर्याभियोग सः वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यते।

प्रश्नाः– (ग) भाषिक कार्यम् –

(i) ''आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्'' इत्यत्र कर्तृपदं लिखत–

उत्तरम् = उभौ।

(ii) ''स्कन्धेन वहनं दुष्करम् आसीत।'' इत्यत्र विशेषणपदं किम्?

उत्तरम् = दुष्करम्।

5. कश्चित् कृषकः बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत। तयोः बलीवर्दयोः एकः शरीरेण दुर्बलः जवेन गन्तुमशक्तश्चासीत्। अतः कृषकः तं दुर्बलः वृषभ तोदनेन नुद्यमानः अवर्तत। सः वृषभः हलमूढ्वा गन्तुमशक्तः क्षेत्रे पपात। क्रुद्धः कृषीवलः। तमुत्थापयितुं बहुवारम् यत्नमकरोत्। तथापि वृषः नोत्थितः।

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कृषकः काभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत्?

उत्तरम् = बलीवर्दाभ्यां।

(ii) क्रुद्धः कृषकः कम् उत्थापयितुं यत्नमकरोत्?

उत्तरम् = वृषभम्।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) बलीवर्दयोः एकः कीदृशः आसीत?

उत्तरम् = बलीवर्दयोः एकः शरीरेण दुर्बलः जवेन गन्तुमशक्तश्चासीत्।

(ii) कृषकः कम तोदनेन नुद्यमानः अवर्तत्?

उत्तरम् = कृषकः दुर्बलं वृषभं तोदनेन नुधमानः अवर्तत।

प्रश्नाः– (ग) निर्देशानुसारम् उत्तरत –

(i) 'बलीवर्दयोः' इति संज्ञापदस्य गद्यांशे सर्वनामपदं किं प्रयुक्तम्?

उत्तरम् = तयोः।

(ii) गद्यांशे 'पपात' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

उत्तरम् = वृषभः।

6. भूमौ पतिते स्वपुत्र दृष्टवां सर्वधेनूनां मातुः सुरभेः नेत्राभ्यामश्रूणि आविरासन्। सुरभेरिमामवस्थां दृष्ट्वा सुराधिपः तामपृच्छत् – ''अयि शुभे! किमेवं रोदिषि? उच्यताम्'' इति। सा च विनिपातो न वः कश्चिद् दृश्यते त्रिदशाधिपः। अहं तु पुत्रं शोचामि, तेन रोदिमि कौशिक।।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत –

(i) सर्वधेनूनां मातुः किन्नाम आसीत? उत्तरम् = सुरभिः।

(ii) सुरभिं कः अपृच्छत्? उत्तरम् = सुराधिपः।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) किं दृष्टवा सुरभेः नेत्राभ्यामश्रुणि आविरासन्?

उत्तरम् = भूमौ पतिते स्वपुत्रं दृष्ट्वा सुरभैः नेत्राभ्यामश्रुणि आविरासन्।

(ii) सुराधिपः किं दृष्ट्वा सुरभिमपृच्छत्?

उत्तरम् = सुरभेरिमामवस्थां (रोदनं) दृष्ट्वा सुराधिपः तामपृच्छत्।

प्रश्नाः– (ग) भाषिककार्यम्–

(i) 'मातुः' इति विशेषणं कस्य?

उत्तरम् = सुरभेः।

(ii) 'सुराधिपः तामपृच्छत्।' अत्र 'ताम्' इति सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्?

उत्तरम् = सुरभ्यै।

न्यायाधीशेन पुनस्तौ घटनायाः विजये वक्तुमादिष्टौ। आरक्षिणि निजपक्षं प्रस्तुतवति आश्चर्यमघत् सः शवः प्रावारकम पसार्य न्यायाधीशमभिवाध निवेदितवान–मान्यवर! एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तद् वर्णयामि 'त्वयाऽहं' चोरितायाः मञ्जूषायाः ग्रहणाद वारितः अतः निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्वं। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्ड लप्स्यसे इति। न्यायाधीशः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्।

प्रश्न– (क) एक पदेन उत्तरत्–

(i) केन पुनस्तौ घटनायाः विषये वक्तुमादिष्टौ?

उत्तरम्– न्यायाधीशेन्।

(क) पूर्ण वाक्यन उतरम् –

(i) कि प्रस्तुतवति आश्चर्यमघटत्? तथा सर्वमवगम्य न्यायाधीशः कि कृतवान्?

उत्तरम्– आरक्षिणि निजपक्षं, प्रस्तुतवति, आश्चर्यमघटत्। तथा सर्वमवगंम्य मुक्तवान्।

(ग) भाषिक कार्यम–

(i) त्वयाऽहं चोरितायाः– 'अत्र' 'त्वया' इति सर्वनाम् पदं करमै प्रयुक्तम् ?

उत्तरम् – अभियुक्याय!

(ii) चोरितायाः मञ्जूषायाः – इत्यनयोः पदयो विशैष्यपदं किम्?

उत्तरम– मञ्जूषायाः

शेखावाटी मिशन–100

अधोलिखितं नाट्याशं पठित्वा एतदाधारित....................................लिखत।

1. रामः – कथमस्मत्समानाभिजनौ संवृत्तौ? विदूषकः – किं द्वयोरप्येकमेव प्रतिवचनम्?

लवः – भ्रातरावावां सोदर्यौ। रामः – समरूपः शरीरसन्निविशः। वयसस्तु न किञ्चिदन्तरम्?

लवः – आवां यमलौ। रामः – सम्प्रति युज्यते। किं नामधेयम्?

लवः – आर्यस्य वन्दनायां लव इत्यात्मानं श्रावयामि (कुशं निर्दिश्य) अर्योऽपि गुरुचरणवन्दनायाम्..............।

कुशः – अहमपि कुश इत्यात्मानं श्रावयामि। रामः – अहो! उदात्तरम्यः समुदाचारः।

किं नामधेयो भवतोर्गुरुः

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत –

(i) लवकुशयोः शरीरसन्निवेशः कीदृशः आसीत्? उत्तरम् = समरूपः।

(ii) कुशलवौ कीदृशौ भ्रातरौ आस्ताम्? उत्तरम् = यमलौ।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उतरत –

(i) कयोः एकमेव प्रतिवचनम् आसीत्? उत्तरम् = लवकुशयोः एकमेव प्रतिवचनम् आसीत्।

(ii) लवकुशयोः समुदाचारः कीदृशः आसीत्? उत्तरम् = लवकुशयोः समुदाचारः च उदात्तरम्यः आसीत्।

प्रश्नाः– निर्देशानुसारम् उत्तरत–

(i) 'कथमस्मत्समानाभिजनौ' इत्यत्र 'अस्मत्' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

उत्तरम् = रामाय।

(ii) 'समुदाचारः इत्यस्य विशेषणपदं नाट्यांशात् चित्वा लिखत।

उत्तरम् = उदात्तरम्यः।

2. लवः – ननु भगवान् वाल्मीकिः। रामः – केन सम्बन्धेन?

लवः – उपनयनोपदेशेन।

रामः – अहमत्रभवताोः जनकं नामतो वेदितुमिच्छामि।

लवः – न हि जानांम्यस्य नामधेयम्। न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति

रामः – अहो माहात्म्यम्। कुशः – जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।

रामः – कथ्यताम्। कुशः – निरनुक्रोशो नाम..............

रामः – व्यस्य, अपूर्व खलु नामधेयम्।

विदूषकः – (विचिन्त्य) एवं तावत् पृच्छामि निरनुक्रोश इति क एवं भणति?

कुशः – अम्बा। विदूषकः – किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था?

कुशः – यद्योवयोर्बालभावजनितं कञ्चिदविनयं पश्यति तदा एवम् अधिक्षिपतिनिरनुक्रोशस्य पुत्रौ, मा चापलम् इति।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कुशलवयोः गुरोः किन्नाम? उत्तरम् = वाल्मीकिः।

(ii) लवः कस्य नामधेयं न जानाति? उत्तरम् = स्वस्य जनकस्य।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्यन उत्तरत –

(i) कुशः स्वस्य पितुः किन्नाम कथयति?

उत्तरम् = कुशः स्वस्य पितुः नाम 'निरनुक्रोशः' इति कथयति।

(ii) तपोवने कश्चिद्धपि कस्य नाम न व्यवहरति?

उत्तरम् = तपोवने कश्चिदपि लवकुशयोः पितुः नाम न व्यवहरति।

प्रश्नाः– (ग) निर्देशानुसारम् उत्तरत–

(i) 'जानाम्यहं तस्य नामधेयम्' – अत्र 'अहम्' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

उत्तरम् = कुशाय।

(ii) 'न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम' इत्यत्र 'अस्मिन' विशेष्यपदस्य विशेष्यपदं किम्?

उत्तरम् = तपोवने।

3. विदूषकः – (जनान्तिकम्) अहं पुनः पृच्छामि। (प्रकाशम्) किं नामधेया युवयोर्जननी?

लवः – तस्याः द्वे नामनी। विदूषकः – कथमिव।

लवः – तपोवनवासिनो देवीति नाम्नाह्वयन्ति, भगवान् वाल्मीकिर्वधूरिति।

रामः – अपि च इतस्तावद् वयस्य!

मुहूर्त्तमात्रम्।

विदूषकः – (उपसृत्य) आज्ञापयतु भवान्।

रामः – अपि कुमारयोरनयोरस्माकं च सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृत्तान्तः?

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत –

(i) कस्याः द्वे नामनी? उत्तरम् = सीतायाः/लवस्य मातुः।

(ii) सीतां वधूरिति नाम्ना कः आह्वयति? उत्तरम् = भगवान् वाल्मीकिः।

प्रश्नाः– (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) लवकुशयोः जननीं के देवीति नाम्नाह्वयन्ति?

उत्तरम् = लवकुशयोः जननी तपोवनवासिनः देवीति नाम्नाह्वयन्ति।

(i) केषां सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृतान्तः? उत्तर– लवकुशयोंः रामस्य च सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृतान्तः।

प्रश्न–(ग) भाषिककार्यम्

(i) 'अहं पुनः पृच्छामि।' अस्मिन् वाक्ये 'अहम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्। उत्तरम्–विदूषकाय।

(ii) नाट्यांशे 'आह्वयन्ति' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्? उतरम् – तपोवनवासिनः

4. **प्रकृतिमाता–** अहं प्रकृतिः युष्माकं सर्वेषां जननी? यूयं सर्वे एव में प्रियाः। सर्वेषामेव मत्कृते महत्वं विद्यते याथासमयम् न तावत् कलहेन समयं वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च तावत् कलहेन समयं वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एवं मोदव समयं वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च रसमयं – कुरुध्वम्। तद्यथा कथितम्–

प्रजासुखे सुखं राज्ञः, प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः, प्रजानां तु प्रियं हितम्।।

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) केन समयं वृथा न यापयन्तु? उत्तरम्–कलहेन।

(i) जीवनं कीदृशं कुरुध्वम्? उत्तरम् –रसमयम्

प्रश्नाः–(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) का सर्वेषां वन्य जीवानां जननी वर्तते? उत्तरम्–प्रकृतिमाता सर्वेषां वन्य जीवनां वतर्ते।

(ii) किं राज्ञः हितम् नास्ति किञ्च हितम्?

उत्तरम्– आत्मप्रियं राज्ञः हितम नास्ति् प्रजानां प्रियं तु राज्ञः हितम्।

प्रश्नाः– (ग) भाषिककार्यम् –

(i) 'युष्माकम् सर्वेषां' – इत्यत्र विशेष्यपदं किम्? उत्तरम् = युष्माकम्।

(ii) 'मे प्रियाः' इत्यत्र 'मे' सर्वनामपदं कस्यै प्रयुक्तम्? उत्तरम् = प्रकृतिमात्रे।

'जननी तुल्यवत्सला' इति कथायाः / पाठस्य सारं हिन्दीभाषायां लिखत।

→ प्रस्तुत पाठ 'जननी तुल्यवत्सला' में वर्णित कथा महाभारत के वनपर्व से ली गई है। यह कथा सभी प्राणियों में समदृष्टि की भावना जगाती है। कथा के अनुसार कोई किसान दो बैलों से खेत की जुताई कर रहा था। उन दोनों बैलों में से एक शरीर से दुर्बल तथा तेज से चलने मे असमर्थ था। अतः किसाान उस दुर्बल बैल को अत्यधिक कष्ट देता था। वह बैल हल उठाकर चलने मे असमर्थ होकर खेत में गिर पड़ा। भूमि पर गिरे हुए अपने पुत्र (बैल) को देखकर गोमाता सुरभि की आँखो में आसूँ आने लगे। सुरभि को राता हुआ देखकर देवराज इन्द्र ने इसका कारण पुछा–

सुरभि ने इन्द्र से कहा कि ''हे इन्द्र। मैं अपने पुत्र (बैल) की दीनता को देखकर रो रही हूँ। वह दीन है, ऐसा जानकर भी किसान अत्यधिक प्रताड़ित करता है। इन्द्र ने कहा कि तुम्हारे तो हजारों पुत्र है, फिर इसी पर इतना प्रेम क्यों है? क्योंकि यह अन्य पुत्रो से दुर्बल है। सभी सन्तानों में माता का स्नेह समान भाव से होता हैं, फिर भी दुर्बल पुत्र के प्रति माता की अधिक कृपा होती है।''

गोमाता सुरभि के वचन सुनकर अत्यधिक आश्चर्यचकित इन्द्र का हृदय भी द्रवित हो गया तथा इन्द्र की कृपा से शीघ्र ही तेज वर्षा होने लगी। सभी जगही पानी ही पानी हो गया, इससे किसान अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने दोनों बैलों को लेकर घर चला गया।

कथा के अन्त में कहा गया है कि सभी सन्तानों मे माता का समान रूप से स्नेहभाव होता है, किन्तु दीन पुत्र के प्रति माता के मन मे अतिशय प्रेम होता है।

'बुद्धिर्बलवती सदा' इति कथायाः सारं हिन्दीभाषायां लिखत–

→ 'बुद्धिर्बलवती सदा' नामक पाठ मूलतः 'शुकसप्ततिः' नामक कथाग्रन्थ से संकलित किया गया है। इस पाठ में वर्णित कथा के माध्यम से बुद्धिमती नामक महिला के बुद्धि–कौशल को दर्शाया गया है। पाठानुसार 'देउल' नामक गाँव में राजसिंह नामक एक राजपूत्र रहता था। एक बार बुद्धिमती नामक उसकी पत्नी किसी कार्य से अपने दो पुत्रों के साथ अपने पिता के घर (पीहर) जाती है। रास्ते में गहन जंगल में उसे एक बाघ आता हुआ दिखाई दिया। वह शीघ्र ही धृष्टतापूर्वक अपने दोनों पुत्रों के थप्पड़ मारकर बोली– ''क्यों एक–एक बाघ को खाने के लिए झगड़ा कर रहे हो? अभी इसे ही बॉटकर खा लेना। बाद में अन्य कोई बाघ देखा जाएगा''। यह सुनकर बाघ उसे ''व्याघ्रमारी' मानकर भयभीत होकर भाग जाता है किन्तु एक धर्त्त श्रृगाल की बातों में आकर वह उस श्रृगाल को अपने गले में बाँधकर पुनः वहीं जंगल के मार्ग में आ जाता है। उसे देखकर प्रत्युत्पन्न बुद्धिवाली वह महिला श्रृगाल को झिड़कती हुई और धमकाती हुई भयानक रूप से शीघ्रतापूर्वक उसकी ओर दौड़ती है। यह देखकर भयभीत हुआ बाघ श्रृगाल सहित वहाँ से भाग जाता है।

इस प्रकार वह बुद्धिमती अपने बुद्धि–कौशल से बाघ से उत्पन्न महान् भय से मुक्त हो जाती है। इसलिए सत्य ही कहा गया है कि– ''हमेशा सभी कार्यों में बुद्धि ही बलवती होती है।''

'विचित्रः साक्षी' इति कथायाः सारं हिन्दीभाषायां लिखत।

→ 'विचित्रः साक्षी' नामक पार में वर्णित कथा के अनुसार एक निर्धन व्यक्ति ने अत्यधिक परिश्रम करके धन एकत्रित किया और उससे अपने पुत्र का एक महाविद्यालय में प्रवेश करा दिया। एक बार वह अपने बीमार पुत्र से मिलने के लिए धनाभाव के कारण पैदल ही चल दिया। रात के. समय एकान्त प्रदेश में पैदल जाना उचित नहीं है, ऐसा मानकर वह पास में ही स्थित गाँव में किसी गृहस्थी के घर में रुक गया।

दुर्भाग्य से उसी रात को उस घर में कोई चोर अन्दर घुस गया तथा एक संदूक को लेकर चला गया। उसके पैरों आवाज से वह अतिथि जाग गया और चोर का पिछा करते हुए पकड़ लिए किन्तु वह चोर ही जोर से चिल्लाने लगा – ''यह चोर है, यह चोर हैं' उसकी आवाज सुनकर गाँव वाले भी वहाँ आ गये और बेचारे अतिथि को ही चोर मानकर उसे भला–पुरा कहने लगे। यद्यपि गाँव का चौकीदार ही चोर था किन्तु उसकी चालाकी से सिपाही ने भी उस

अतिथि को ही चोर बतलाकर जेल में डाल दिया। अगले दिन न्यायालय में उन दोनों से न्यायाधीश ने सम्पूर्ण विवरण सुना। न्यायाधीश ने एक विचित्र युक्ति का सहारा लेकर गाँव के बाहर सड़क किनारे पड़े एक व्यक्ति के शव को न्यायालय मे लाने हेतु उन दोनों को आदेश दिया। आदेशानुसार शव लाते समय मार्ग में जब असली चोर ने कहा कि – ''तुमने मुझे चोरी करने से रोका था, अब उसका फल भागोगे। तुम्हें चोरी के आरोप में तीन वर्ष की सजा होगी''

न्यायालय में शव लाने के बाद न्यायाधीश ने फिर से उन दोनों से घटना के विषय में पूछा। जब चौकीदार अपना पक्ष प्रस्तुत करने लगा तभी उस शव ने अपने दुपट्टे को हटाकर एवं न्यायाधीश को प्रमाण करके मार्ग में चौकीदार द्वारा जो कुछ कहा गया था, वह सब सुना दिया। न्यायाधीश ने चौकीदार को कारावास का दण्ड देकर उस व्यक्ति को सम्मानपूर्वक मुक्त कर दिया। वस्तुतः बुद्धिमान लोग नीतिपूर्ण युक्ति से अत्यंत कठोर कार्य को भी सरलता से सम्पन्न कर लेते हैं।

श्लोक अन्वय

प्र:1 अधोलिखितश्लोकस्य अन्वयं मञ्जूषातः पदानि चित्वा पूरयत –

अमन्त्रक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषः नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।।

अन्वयः– अमन्त्रम् (i) ....नास्ति अनौषधम् (ii) .... नास्ति, अयोग्यः (iii) .... नास्ति, तत्र (iv) .... दुर्लभः।

मञ्जूषाः– पुरूषः, अक्षरं, योजकस्तत्र, मूलं

उत्तर– (i) अक्षरं (ii) मूलं (iii) पुरूषः (iv) योजकः

प्र:2 सम्पतौ च विपत्तौ महतामेकरूपता।
उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा ।। 2।।

अन्वयः महताम् (i) ....विपत्तौ च एकरूपता (ii) ....।
सविता (iii) .... रक्तः तथा अस्तमये च (iv) .... भवति।

मञ्जूषा– रक्तः भवति, सम्पत्तौ, उदये।

उत्तर– (i) सम्पत्तौ (ii) भवति (iii) उदये (iv) रक्तः

प्र:3 आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा चं नावसीदति ।। 3 ।।

अन्वयः – हि मनुष्याणां (i) ....महान् रिपुः (ii) .... । उद्यमसमः
(iii) ....न अस्ति यं (iv) .... न अवसीदति।

मञ्जूषा– कृत्वा, आलस्यम्, शरीरस्थो, बन्धुः।

उत्तर– (i) **शरीरस्थो** (ii) **आलस्यम्** (iii) **बन्धुः** **(iv) कृत्वा**

प्रः4 विद्वांस एवं लोकेऽस्मिन चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।

अन्येषां वदने ये तु ते चक्षुर्नामनी मते ।। 4 ।।

अन्वयः– अस्मिन् (i) .... विद्वान्सः एवं (ii) .... प्रकीर्तिताः

(iii) ....वदने तु ये (iv) .... मते।

मञ्जूषाः– चक्षुर्नामिनी, लोके, अन्येषां चक्षुष्मन्त है।

उत्तर– (i) लोकें (ii) चक्षुष्मन्तः (iii) अन्येषा (iv) चक्षुर्नामनी

प्रः5 य इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानिः सुखानि च।

न कुर्यादहितं कर्म स परेभ्यः कदापि च ।। 5।।

मञ्जूषाः– परेभ्यः, सुखानि, कदापि, आत्मनः।

अन्वव्य :– य ....श्रेयः प्रभूतानि .... च इच्छाति

सः .... कदापि च .... कर्म न कुर्यात्।

उत्तर– (i) आत्मनः (ii) सुखानि (iii) परेभ्यः (iv) अहितम्

प्रः6 आचारः प्रथमो धर्मः इत्येतद् विदुषां वचः।

तस्माद् रक्षेत् सदाचारं प्राणोभ्योऽपि विशेषतः ।।

अन्वयः– आचारः (i) .... धर्मः इति एतद् (ii) .... वचः तस्मात्

(iii) ....सदाचार प्राणोभ्योऽपि (iv) ....।

मञ्जूषाः– विशेषतः, विदुषां, प्रथमो, रक्षेत्।

उत्तर–(i) प्रथमो (ii) विदुषां (iii) विशेषतः (iv) रक्षेत्

प्रः7 एक एव खगो मानी वने वसति चातकः।

पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरुदरम् ।।

अन्वयः– एकः (i) .... मानी खगः (ii) .... वने वसति वा ।

(iii) ....म्रियते (iv) ....याचते वा ।।

मञ्जूषाः– पुरुदरं, चातकः, एव, पिपासितः।

उत्तरः– (i) एव (ii) चातकः (iii) पिपासितः (iv) पुन्दरं

प्रः8 त्यक्तवा धर्मप्रदां वाचं परुषां योऽभ्युदीरयेत्।

परित्यज्य फलं पक्वं भुङ्क्तेऽपक्वं विमूढधीः।

अन्वयः यः (i) .... धर्मप्रदां वाचं (ii) ....परूषामभ्युदीरयेत सः

पक्वं (iii) .... परित्याज्यं अपक्वं (iv) .... भुङ्क्ते ।

मञ्जूषाः– त्यक्त्वा, विमूढधी, फलं, फलम।

उत्तर = (i) **विमूढधी** (ii) **त्यक्त्वा** (iii) **फलम्** (iv) **फलं**

प्रः9 ददाति प्रतिगृहणति, गुह्यमाखयाति पृच्छति।

भुङ्क्ते योजयते चैव षड्–विधं प्रीतिलक्षणम्

अन्वयः – ददाति (i) .... गुह्यम् (ii) .... पृच्छति, भङ्क्ते

(iii) .... च, प्रीतिलक्षणं (iv) ....एव (भवति).

मञ्जूषाः– योजयते, षड्विधम्, आख्याति, प्रतिगृह्णाति।

उत्तर–(i) प्रतिगृह्णाति (ii) आख्याति (iii) योजयते (iv) षड्विधम्

प्रः10 श्लोकः– प्राणिनां जायते हानिः परस्परविवादतः।

अन्योन्यसहयोगेन लाभस्तेषां प्रजायते।।

अन्वयः परस्परविवादतः (i) ....हानिः (ii) .... । अन्योन्यसहयोगेन

(iii) .... लाभ (iv) .... ।

मञ्जूषाः– जायते, तषाम, प्राणिनं, प्रजायते।

उत्तर– (i) **प्राणिनं** (ii) **जायते** (iii) **तेषाम्** (iv) **प्रजायते**

प्रः11श्लोकः– दुष्कराण्यपि कर्माणि मतिवैभवशालिनः।

नीति युक्तिं समालम्ब्य लीलयैव प्रकुर्वते।।.

अन्वयः– मतिवैभवशालिनः (i) ....युक्तिं समलाम्ब्य (ii) ....कर्माणि

(iii) .... लीलया एवं (iv) .... ।

मञ्जूषाः– अपि, फुकुर्वते, नीति, दुष्कराणि

उत्तर– (i) नीति (ii) दुष्कराणि (iii) अपि (iv) प्रकुर्वते।

प्रः12 श्लोकः–अगाधजलसञ्चारी न गर्व याति रोहितः।

अङ्गुष्ठोदकमात्रेण शफरी फुर्फुरायते ।।

अन्वयः – अगाधजलः (i) .... राहित गर्व (ii) .... याति

(iii) .... उदकमात्रेण (iv) .... फुरफुरायते।

मञ्जूषा= न, अग्डुष्ठ, सञ्चारी, शफरी

उत्तर– (i) सञ्चारी (ii) न (iii) अगुड्ष्ठ (iv) शफरी

प्र:13 श्लोकः– यो न् रक्षाति वित्रस्तान् पीड्यमानान्परैः सदा।

जन्तुन पार्थिवरूपेण स कृतान्तो न संशयः।।

अन्वयः– ; %(i) ....वित्रस्तान् पीड्यमानान् (ii) .... पार्थिवरूपेण

सदा न (iii) .... सः कृतान्तोः न (iv) .... ।

मञ्जूषाः– जन्तून्, संशय, पर, रक्षति

उत्तर = (i) **परैः** (ii) **जन्तून** (iii) **रक्षति,** (iv) **संशय**

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न निर्माणम्

अधोलिखितवाक्येषु रेखाखण्डित– पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं करूत–

(1) उद्याने पक्षिणां कलरवं चेतः प्रसादयति।

प्रश्न निर्माण–उद्याने केषां कलरवं चेतः प्रसादयति?

(2) पाषाणीसभ्यता लतातरुगुल्माः प्रस्तरतले पिष्टाः के सन्ति।

प्रश्न निर्माण–पाषणीसभ्यता के प्रस्तरतले पिष्टाः सन्ति?

(3) प्रकृत्याः सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते।

प्रश्न निर्माण–कस्याः सन्निधो वास्तविकम् सुखं विधते?

(4) बुद्धिमती चपेटया पुत्रौ प्रहतवती।

प्रश्न निर्माण–बुद्धिमती कया पुत्रौ प्रहतवती ?

(5) त्वम् मानुषात् विभेषि।

प्रश्न निर्माण–त्वम् कस्मात् विभेषि?

(6) भृङ्गाः रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते।

प्रश्न निर्माण–भृङ्गाः कानि समाश्रयन्ते?

(7) पतङ्गाः के अम्बरपथम् आपेदिरे।

प्रश्न निर्माण–के अम्बरपथम् आपेदिरे?

(8) सरसः शोभा राजहंसेन भवति।

प्रश्न निर्माण–कस्य शोभा राजहंसेन भवति?

(9) राजहंसेन सरसः अम्बूनि निपीतानि।

प्रश्न निर्माण–केन सरसः अम्बूनि निपीतानि?

(10) एतादृशी भयावहघटना गढवालक्षेत्र घटिता।

प्रश्न निर्माण–कीदृशी भयावहघटना गढ़वालक्षेत्र घटिता।

(11) विमूढधीः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुड़्क्ते।

प्रश्न निर्माण– कः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुड़्क्ते।

(12) जनकेन सुताय शैशवे विद्याधनं दीयते।

प्रश्न निर्माण–जनकेन कस्मै शैशवे विद्याधनं दीयते?

(13) आत्मकल्याणम् इच्छन् नरः परेषाम् अनिष्टं न कुर्यात्।

प्रश्न निर्माण–आत्मकल्याणम् इच्छन् नरः केषाम् अनिष्टं न कुर्यात?

(14) चौरस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः।

प्रश्न निर्माण– कस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः?

(15) ऊभौ शवं चत्वरे स्थापितवन्तौ।

प्रश्न निर्माण– ऊभौ शवं कुत्र स्थापितवन्तौ?

(16) वानरः आत्मानं वनराजपदाय योग्यः मन्यते।

प्रश्न निर्माण– वानरः आत्मानं कस्मै योग्यः मन्यते?

(17) सर्वे प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति।

प्रश्न निर्माण– सर्वे काम् प्रणमन्ति।

(18) समीपे एका नदी वहति।

प्रश्न निर्माण– समीपे का वहति?

(19) वनराजपदाय सुपात्रं चीयते।

प्रश्न निर्माण– कस्मै सुपात्रं चीयते?

(20) त्वं कर्कशध्वनिना वातावरणमाकुलीकराषि।

प्रश्न निर्माण–त्वं केन वातावरणमादुलीकरोषि?

(21) वसन्तसमये पिककाकयोः भेदः दृश्यते।

प्रश्न निर्माण– वसन्तसमये कयोः भेदः दृश्यते?

(22) उद्यमेन समः बन्धु नास्ति।

प्रश्न निर्माण– केन समः बन्धु नास्ति?

(23) वसन्तस्य गुणं पिकः वेति न वायसः।

प्रश्न निर्माण– कस्य गुणं पिकः वेति न वायसः।

शेखावाटी मिशन–100

(24) आलस्यं मनुष्याणां महान् रिपुः।

प्रश्न निर्माण– किम् मनुष्याणां महान् रिपुः?

(25) सुराधिपः ताम् अपृच्छत।

प्रश्न निर्माण– कः ताम् अपृच्छत्?

(26) सहस्त्राधिकेषु पुत्रेषु सत्स्वपि सा दःखी आसीत्।

प्रश्न निर्माण– केषु पुत्रेषु सत्स्वपि सा दःखी आसीत्?

(27) वृषभः क्षेत्रे पपात।

प्रश्न निर्माण– वृषभः कुत्र पपात?

(28) बलीवर्दः जवेन गन्तुम् अशक्तः आसीत्।

प्रश्न निर्माण– कः जवेन गन्तुम् अशक्तः आसीत्?

(29) सर्वेवपत्येषु जननी तुल्यवत्सला एव।

प्रश्न निर्माण– केषु जननी तुल्यवत्सला एव?

(30) सव्यवधानं चरित्रलोपाय न भवति।

प्रश्न निर्माण– किम् चरित्रलोपाय न भवति?

(31) तस्याः द्वे नामनी।

प्रश्न निर्माण– कस्याः द्वे नामनी?

(32) सिंहासनस्थः रामः प्रतिवशति।

प्रश्न निर्माण– सिंहासनस्थः कः प्रतिवशति ?

(33) गणतन्त्रदिवसपर्वणि भारताराष्ट्रम उल्लासे मग्नमासीत् ।

प्रश्न निर्माण– कदा भारताराष्ट्रम उल्लासे मग्नमासीत्?

(34) विवशाः प्राणिनः आकाशे पिपीलिकाः इव निहन्यन्ते।

प्रश्न निर्माण– किदृशाः प्राणिनः आकाशे पिपीलिकाः इव निहन्यन्ते?

(35). भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छजनपदं ध्वंसावशेषेषु परिवर्तितवती।

प्रश्न निर्माण– भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छजनपदं केषु परिवर्तितवती?

(36) तदिदानीम् भूकम्पकारणं विचारणीयं तिष्ठति।

प्रश्न निर्माण– तदिदानीम् किम् विचारणीयं तिष्ठति ?

(37) भृङ्गाः रसालमुकुलानि आश्रयन्ते।

प्रश्न निर्माण– भृङ्गाः कानि आश्रयन्ते ?

(38) पतङ्गाः अम्बरपथम् आपेदिरे।

प्रश्न निर्माण– के अम्बरपथम् आपेदिरे?

(39) चातकः वने वसति।

प्रश्न निर्माण– कः वने वसति ?

(40) सर्वे प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति।

प्रश्न निर्माण– सर्वे कां प्रणमन्ति?

अद्योलिखितं अपठित गद्यांशं पठित्वा एतत् आधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथा निर्देशं लिखत

प्रः1 अधोलिखितं गधांशं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम् उतराणि यथानिर्देशं लिखत–

सताम जनानां संगतिः सत्संगति कथ्यते। मानवः यादृशैः जनैः सहः वसति। तादृशः एव भवति। सज्जनानां सम्पर्केण मनुष्यः सज्जनः भवति। उन्नति महत्पदं च अंलकरोति। दुर्जनानां संगत्या मनुष्यो दुर्जनो भवति, पतनं विनाशे च प्राप्नोति। अतः मनुष्यस्योपरि संगते महान प्रभावो भवति। बाल्यकाले विशेषतों बालकस्योपरि संसर्गस्यप्रभावों भवतिं। ये यादृशै बालेकैः सह उपविशन्ति, उतिष्ठन्ति, खादन्ति, पिबन्ति च ते तेथैव स्वभावं धारयन्ति। अतः बाल्यकाले दुर्जनैः सह संगतिः कदापि न करणीया !

सजनानां संगत्या मनुष्यः उन्नतिं प्राप्नोति । तस्य विधा कीर्तिश्च वर्धेते। दुर्जनानां संसर्गेण बहव हानयः भवन्ति, यथा– दुर्जनसंसर्गेण मनुष्याऽसद्वृतो भवति दुर्विचार युक्तो भवति, तस्य बुद्धिदुर्षिता भवति, अतः बुद्धिः क्षीयते मनुष्यः दुर्व्यसनोग्रस्त भवति। अतस्तस्य शरीर क्षीणं निर्बलं च भवति। तस्य कीर्ति नश्यति सर्वत्रानादरो भवति। अतः स्वयशोवृद्धये ज्ञानवृद्धये सुखस्य शान्तेश्च प्राप्त्यर्थ सवैरपि सर्वदा संत्सगतिः करणीया, दुर्जनसंगतिः सदा परिहर्तव्या !

प्रश्न–(क) एकपदेन उतरत –

(i) केषां जनानां संगतिः सत्संगतिः कथ्यते?

उतर– सताम्

(ii) केषां संसर्गेण बहवः हानयः भवन्ति?

उत्तर – दुर्जनानाम्

(ख) पूर्ण वाक्येन उतरत्–

(i) सज्जानानांम सम्पर्केण मनुष्यः किम् अलंकरोति? तथा केन मनुष्यस्यः बुद्धि क्षीयते?

उत्तर – सज्जनानाम् सम्पर्केण मनुष्यः उन्नति महत्पदं च अलंकरोति तथा दुर्जनसंसर्गेण मनुष्यस्य बुद्धिः क्षीयते।

(ग) अस्य गंधाशस्य समुचित शीर्षकं लिखत् ।

उत्तर–सत्संगतेः महत्वम्।

(घ) भाषिक कार्यम् –

(i) 'प्राप्नोति' इति क्रियापदस्य गंधाशे कर्तृपदं किमस्ति?

उत्तर–मनुष्यः।

(ii) महान् इति विशेषणस्य गंधाशात् विशेष्यपद चित्वा लिखत।

उतर – प्रभावः

(iii) तस्य कीर्तिः नश्यतिः– इत्यत्र 'तस्य', सर्वनाम पद, स्थाने संज्ञापदं लिखत् – उत्तर – दुर्जनस्य

प्र:2 मानवस्य बौद्धिक विकासाय ज्ञानवर्धनाय च पुस्तकालयानां महत्वपूर्ण स्थान वर्तते। पुस्तकालयेषु विविध पुस्तकानां संग्रहो भवति। अत्र विविध भाषाणां पत्र – पत्रिकादयोऽपि प्रतिदिनं आयान्ति। अस्माकं पुस्तका लयः नगरस्य रमणीय स्थाने वर्तते। अस्मिन् दशसहस्त्राणि पुस्तकानि सन्ति। अस्माकं पुस्तकालये हिन्दी–आंग्ल संस्कृत भाषाणां पत्र– पत्रिकाः प्रतिदिन आयान्ति। अस्य समीपे एकः वाचनालयः वर्तते। यत्र बहवः जनाः छात्रा युवतयश्च प्रतिदिन आगत्य स्वाध्यायं कुर्वन्ति।

अस्माकं पुस्तकालस्य भवनं विशालं रमणीयं च वर्तते। अस्य पुस्तकालस्य सर्वे जनाः प्रंशसा कुर्वन्ति। अस्मांकं ज्ञानवर्धनाय अस्य महती भूमिका वर्तते। अयम् एक आदर्शः पुस्तकालयः विधते!

प्रश्न –(क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कस्य समीपे वाचनालयः वर्तते?

उत्तरम् – पुस्तकालये

(ii) अस्माकं पुस्तकालये कति पुस्तकानि सन्ति?

उत्तरम्– दशसहस्त्राणि

प्रश्न –(ख) पूर्ण वाक्येन उत्तरत–

(i) अस्माकम् पुस्तकालयः कुत्र वर्तते?

उतरम् – अस्माकम् पुस्तकालयः नगरस्य रमणीये स्थाने वर्तते।

प्रश्न– (ग) अस्य गंधाशस्य समुचितं शीर्षक लिखत्।

उत्तरम् – अस्माकं पुस्तकालयः।

प्रश्न– (घ) निर्देशानुसारं प्रदत्तविकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरम् चित्वा लिखत्।

(i) पत्र – पत्रिकाः इति कर्तृ पदस्य गंधाशे क्रियापदे किमस्ति?

उत्तरम् – आयान्ति।

(ii) 'निन्दाम्' इत्यस्य विलोमपदं गंधाशात् चित्वा लिखत्।

उत्तरम् प्रशंसाम्।

(iv) आदर्शः इति विशेषणस्य गंधाशात विशेष्य पद चित्वा लिखत्।

उत्तरम् – पुस्त कालयः ।

प्र:3 अधोलिखित गंद्याशं पठित्वा एतदाधारित् प्रश्नानाम् उत्तराणि यथा निर्देशं लिखत!

डॉ भीमराव आम्बेडकरः संस्कृतं पठितुम इष्टवान् आसीत, परन्तु सः अस्पृश्यः इति कारणतः कश्चन संस्कृतज्ञः आम्बेडकरं निराकृतवान्– इति विषयः तु आम्बेडकर–महोदयस्य जीवन सम्बन्धी – पुस्तकेषु लिखितः अस्ति, सः विषयः तु प्रचारें अपि अस्ति। 'भारतस्य राजभाषा संस्कृतं भवेत्' इति सांविधान सभायां संशोधन – प्रस्तावः आनीतः आसीत्। अयं विषयः अपि कतिपय वर्षेभ्यः पूर्वः ज्ञातः आसीत् । परम इदानी कश्चन नूतनः विषयः प्रकाशम् आगतः अस्ति। नव प्राप्त प्रमाणैः ज्ञायते यत् डॉ. आम्बेडकरः न केवलं संस्कृतं जानाति स्म, अपितु सः सस्कृतेन भाषते स्म इति। यतः सविधानस भायां यदा राजभाषा सम्बन्धे चर्चा प्रर्वतते स्म। तदा डॉ० आम्बेडकरः पण्डित लक्ष्मी कान्त मैत्रेण सह संस्कृतेन वातोलापं कृतवान्। तत्सम्बन्धे तत्कालीनेषु वार्तापत्रेषु प्रमुखतया वार्ताः प्रकाशिताः आसन्।

प्रश्न (क) एकपदेन उतरत–

(i) डॉ. आम्बेडकरः केन सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान्?

उत्तरः– पण्डित लक्ष्मीकान्त मैत्रेण सह!

(ii) कः संस्कृतस्य राजा भाषात्त्वं समर्थितवान्?

उत्तरः– डॉ आम्बेडकर !

(ख) पूर्णवाम्येन उतरत् ।

(i) संविधान सभायां कः संशोधन प्रस्तावः आनीतः?

उत्तर – भारतस्य राजभाषा संस्कृतं भवेत् इति सविधान सभायां संशोधन प्रस्तावः आनीतः।

(ग) उपर्युक्त गंद्याशस्य समुचितं शीर्षक लिखत् ।

उत्तर – डॉ. भीवराव आम्बेडकरस्य संस्कृत निष्ठा।

(घ) भाषिक कार्यम –

(i) भाषते स्म गति क्रियापदस्यं कर्तृपदं किम्?

उत्तर– डॉ. अम्बेडकरः।

(ii) नूतनः इति विशेषणपदस्य गंधाशे विशेष्य पदं किमस्ति?

उत्तर– विषयः।

(iii) 'सः संस्केृत जानाति स्म' –इत्यत्रः सः इति सर्वनाम स्थाने संज्ञापद किम्?

उत्तर–डॉ. अम्बेडकरः।

प्र:4 अधोलिखित गंद्याश पठित्वा एतदाधाति प्रश्नानाम् उत्तराणि यथा निर्देशं लिखत–

भारत वर्षः एकः महान देशः वर्तते। अस्मिन् अनेके प्रदेशाः सन्ति। तेषु साम्प्रतं राजस्थान प्रदेशः एकं राज्यं वर्तते। अस्य राजधानी जयपुरं अस्ति। राजस्थान प्रदेशस्य काश्चन एतादृशः विशेषताः सन्ति याः खलु अन्यत्र न लभन्ते। अस्य प्रदेशस्य भूमिः वीराणां वीरंगनानाञ्च जननी वर्तते। अत्र महाराणा प्रतापः महाराणा सांगा वीर दुर्गादास सदृशाः वीरा समुत्पन्नाः। अत्रैव पद्मिनी पन्ना सदृश्यः वीरांगनाः समुत्पन्नाः। अधापि राजस्थानस्य अनेके, वीराः देश सेवायां तत्पराः वर्तन्ते। अयं प्रदेशः न केवलं वीराणां भूमिः अपितु विदुषा जन्मस्थली कार्यस्थली च वर्तते। अत्र अनेके विद्वान्स काले काले समुत्पना। राजस्थानस्य राजधानी जयपुरं तु लघुकाशी मन्यते। अत्र संस्कृतस्य अनेके विद्वान्सः अभवन्।

राजस्थान प्रदेश अनेकानि दर्शनीय – स्थलानि सन्ति। प्राकृतिक सौन्दर्य दृष्ट्याऽपि प्रदेशोऽयं सुरम्यः तर्तते। अत्र जयपुर–उदयपुर–भरत पुरादयः विभिन्न–नगराणि विश्व प्रसिद्धानि सन्ति। बहवः पर्यटकाः अत्र भ्रमणार्थम् आगच्छन्ति!

प्रश्न– (क)एक प्रदेन उत्तरत–

(i) कस्य प्रदेशस्य राजधानी जयपुरं वर्तते ?

उत्तर – राजस्थान प्रदेशस्य,

(ii) लघुकाशी मन्यते ?

उत्तर – जयपुरं

(ख) पूर्णवाम्येन उतरत –

(i) राजस्थानस्य भूमिः केषां जननी वर्तते ? तस्य अनेके वीराः कुत्र तत्पराः सन्ति?

उत्तर– राजस्थानस्य भूमिः वीराणां वीरंगनानाञ्च जननी वर्तते। तस्य अनेके वीराः देश सेवायां तत्पराः सन्ति।

(ii) अस्य गधांशस्य समुचित शीर्षकं लिखत्।

उत्तर– राजस्थान–प्रदेशः।

(घ) भाषिक कार्यम् –

(i) 'पर्यटकाः' इति कर्तृपदस्य गंधाशे क्रियापदे किमस्ति ?

उत्तर – आगच्छन्ति।

(ii) 'विद्वान्सः' इति विशेष्य पदस्य गंधाशे विशेषण पदं किम्?

उत्तर–अनेके!

(iii) ''अस्मिन् अनेके प्रदेशाः सन्ति।'' इत्यत्र 'अस्मिन्' सर्वनाम पद स्थाने संज्ञा पदं लिखत।

उत्तर – भारत वर्षे।

प्रः5 अधोलिखितं गद्याशं पठित्वा तदाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथा निदेश लिखत–

इदं हि विज्ञान प्रधाने युगम्। 'विशिष्टं ज्ञानं विज्ञानम्' इति कथ्यते। अस्यां शताब्द्यां सर्वत्र विज्ञानस्यैव प्रभावो दरीदृश्यते। अधुना नहि तादृशं किमपि कार्य यत्र विज्ञानस्य साहाम्यं नापेक्ष्यते। आवागमने, समाचार प्रेषणे, दूरदर्शने, सम्भाषणे

शिक्षणे, चिकित्सा क्षेत्रे, मनोरंजन कार्य, अन्नोत्पादने, वस्त्र निर्माणे, तथैवगन्यकार्य कलापेषु विज्ञानस्य प्रभावहस्तदपेक्षा च सर्वत्रैवानुभूयते। सम्प्रति मानवः प्रकृति वशीकृत्य तो स्वेच्छया कार्येषु निवर्तते। तथाहि वैज्ञानिकैः के आविष्काराः विहिताः। मानवजातेः हिताहितम् दृष्टाः, वैज्ञानिकै। राजनीतिविज्ञैर्वा परमाणु शक्तेः अस्त्रनिर्माणे एवं विशेषतः उपयोगो विहितः। तदुत्पादितं च लोकध्वंसकार्यम अतिघोरं निघृणं च। अयं च न विज्ञानस्य दोषः न वा परमाणु शक्तैपराधः पुरुषापराधः खलुः एषः अतः अस्य मानव कल्याणार्थ एव प्रयोगः करणीयः।

प्रश्न– (क) एकपदेन उतरत –

(i) विशिष्टं ज्ञानं किम् कथ्यते ?

उत्तर – विज्ञानम्

(ii) कैः अनेके आविष्काराः विहिताः?

उतर – वैज्ञानिकैः

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(ii) अधुना समस्त कार्यकलापेषु कस्य प्रभावः अनुभूयते?

उत्तर – अधुना समस्त कार्यकलापेषु विज्ञानस्य प्रभावः अनुभूयते!

(ग) उपर्युक्त गंधाशंस्य समुचित शीर्षक लिखत्।

उत्तर–विज्ञानस्य प्रभावः।

(घ) भाषिक कार्यम् –

(i) 'दरीदृश्यते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किमस्ति?

उत्तर–प्रभावः।

(ii) 'विज्ञान प्रधानम्' इति विशेषणस्य गंधाशे विशेष्यपदं किम् ?

उत्तर–युगम्।

शेखावाटी मिशन–100

सन्धि प्रकरणम्

सन्धि कार्यम

पद	संधि विच्छेद	संधि का नाम
(1) धूम मुञ्चति	धूमम् +मुञ्चति	अनुस्वारः सन्धि
(2) अन्तर्जगति	अन्तः + जगति	रुत्वम् संधि
(3) सत्+चित्	सच्चित	श्चुत्वम् सन्धि
(4) हरिः + त्राता	हरिस्त्राता	सत्वम् सन्धि
(5) प्रातः + उदेति	प्रातरूदेति	सत्वम् सन्धि
(6) मनः + रथः	मनोरथ	उत्वम् सन्धि
(7) उच्चारणम्	उत्+चारणम्	श्चुत्व सन्धि
(8) मनः + तापः	मनस्ताप	सत्व सन्धि
(9) निश्छलः	निः + छलः	सत्व सन्धि
(10) सज्जनः	सत् + जनः	श्चुत्व सन्धि
(11) राष्ट्रम	राष् + त्रम	ष्टुत्व सन्धि
(12) विपत्कालः	विपद् + कालः	चर्त्व सन्धि
(13) बालो याति	बालः + यााति	उत्व सन्धि
(14) रामस् + टीकते	रामष्टीकते	ष्टुत्व सन्धि
(15) अच् + अन्तः	अजन्तः	जश्त्व सन्धि
(16) वृक्षाद् + पतति	वृक्षात्पतति	चर्त्व सन्धि
(17) शरद + कालः	शरत्कालः	चत्व सन्धि
(18) इष्टः	इष् + तः	ष्टुत्व सन्धि
(19) सत्पुत्रः	सद् + पुत्रः	चर्त्व सन्धि
(20) यस्तु	यः + तु	सत्व सन्धि
(21) उज्ज्वलः	उत् + ज्वलः	श्चुत्व सन्धि
(22) दिगम्बर	दिक् + अम्बरः	जश्त्व सन्धि
(23) हरिं वन्दे	हरिम् + वन्दे	अनुस्वार सन्धि
(24) दिग्गजः	दिक् + गज	जश्त्व सन्धि
(25) तत्फलम्	तद् + फलम	चर्त्व सन्धि
(26) नमः + तुभ्यम्	नमस्तुभ्यम्	सत्व सन्धि

शेखावाटी मिशन–100

(27) नमस्ते	नमः + ते	सत्व सन्धि
(28) कोऽयम्	कः + अयम्	उत्व सन्धि
(29) धनुः + टंकर	धनुष्टङ्कारः	सत्व सन्धि
(30) पितुर्गृहम	पितुः + गृहम	रुत्व सन्धि
(31) सञ्चरणम्	सम् + चरणम्	अनुस्वार सन्धि
(32) कः + अत्र	कोऽत्र	उत्व सन्धि
(33) सत्यम् + वद	सत्यं वद	अनुस्वार सन्धि
(34) मनोहरः	मनः + हरः	उत्व सन्धि
(35) वागीशः	वाक् + ईशः	जश्त्व सन्धि
(36) प्रकृतिरेव	प्रकृतिः + एव	रूत्व सन्धि
(37) षडाननः	षट् + आननः	जश्त्व सन्धि
(38) रामः + च	रामश्च	श्चुत्व सन्धिष
(39) सद + कारः	सत्कारः	चर्त्व सन्धि
(40) सः + आगच्छति	स गच्छति	विसर्ग लोप
(41) एषः + विष्णुः	एष विष्णुः	विसर्ग लोप
(42) बालाः + इच्छति	बाला इच्छति	विसर्ग लोप
(43) वृद्धाः + यान्ति	वृद्धा यन्ति	विसर्ग लोप
(44) प्रातः + गच्छति	प्रातर्गच्छति	रुत्व सन्धि

समास विग्रह

पद	समास विग्रह	समास का नाम
(1) अनुराजम्	राज्ञः पश्चात्	अव्ययीभाव समासः
(2) अनुरथम	रथस्य पश्चात्	अव्ययीभाव समासः
(3) उपनदि	नघाः समीपं	अव्ययीभाव समासः
(4) उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपे	अव्ययीभाव समासः
(5) सचित्रम्	चित्रेण सहितम्	अव्ययीभाव समासः

शेखावाटी मिशन–100

(6) निर्विघ्नम्	विघ्नानाम् अभावः	अव्ययीभाव समासः
(7) निर्मक्षिकम्	मक्षिकानाम् अभावः	अव्ययीभाव समासः
(8) निर्जलम	जलस्य अभावः	अव्ययीभाव समासः
(9) प्रतिदिनम्	दिनं दिनं प्रति	अव्ययीभाव समासः
(10) प्रतिगृहम्	गृहं गृहं प्रति	अव्ययीभाव समासः
(11) प्रतिग्रामम	ग्रामं ग्रांम प्रति	अव्ययीभाव समासः
(12) यथाशक्ति	शक्तिम् अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समासः
(13) यथेच्छम	इच्छाम् अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समासः
(14) यथाविधि	विधिम् अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समासः
(15) नीलम् उत्पलम्	नीलोत्पलम्	कर्मधारय समासः
(16) महान् च असौ राजा	महाराजः	कर्मधारय समासः
(17) घन इव श्यामः	घनश्यामः	कर्मधारय समासः
(18) कमलम् इव मुखम	कमलमुखम्	कर्मधारय समास
(19) चन्द्र इव मुखम	चन्द्रमुखम्	कर्मधारय समास
(20) सप्तानां दिनानां समाहारः	सप्तदिनम्	द्विगु समास
(21) पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चपात्रम्	द्विगु समास
(22) त्रयाणां भुवनाना समाहारः	त्रिभुवनम्	द्विगु समास
(23) माता च पिता च	पितरौ	द्वन्द्व समास
(24) हेमन्तश्च शिशिरश्च	हेमन्तचशिशिरग्रीष्माः	द्वन्द्व समास
(25) पञ्चानां रात्रीणां समाहारः	पञ्चरात्रम्	द्विगु समास
(26) चतुर्णां युगानां समाहारः	चतुर्युगम्	द्विगु समास
(27) त्रयाणां लोकानां समाहारः	त्रिलोकी	द्विगु समास
(28) पञ्चानां वटानां समाहारः	पञ्चवटी	द्विगु समास
(29) सप्तानां शतानां समाहारः	सप्तशती	द्विगु समास
(30) अष्टाना अध्यायानां समाहारः	अष्टाध्यायी	द्विगु समास
(31) पीतम् अम्बर यस्यसः	पीताम्बरः (कृष्ण)	बहुव्रीहि समास

शेखावाटी मिशन–100

(32) महाबाहू:	महान्तौ बाहू यस्य सः (विष्णुः)	बहुव्रीहि समास
(33) दशाननः	दश आननानि यस्य सः (रावणः)	बहुव्रीहि समास
(34) चतुर्मुखः	चत्वारि मुखानि यस्य सः। (ब्रह्मा)	बहुव्रीहि समास
(35) चक्रपाणिः	चक्र पाणौं यस्य सः (विष्णुः)	बहुव्रीहि समास
(36) चन्द्रमुखीः	चन्द्र इव मुखं यस्याः सा (नारी)	बहुव्रीहि समास
(37) शूलपाणिः	शूलं पाणौं यस्य सः (शिवः)	बहुव्रीहि समास
(38) चन्द्रशेखरः	चन्द्र शेखरे यस्य सः (शिवः)	बहुव्रीहि समास
(39) धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च	धर्मार्थकाममोक्षाः	द्वन्द्व समास
(40) यथोचितम्	उचितं अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
(41) उपगृहम	गृहस्य समीपम	अव्ययीभाव समास
(42) यमुनायाः समीपम्	उपयमुनम्	अव्ययीभाव समास
(43) प्रत्येकं	एकम् एकम् प्रति	अव्ययीभाव समास
(44) भीमार्जुनौ	भीमः च अर्जुनः च	द्वन्द्व समास
(45) पाणी च पादौ च	पाणिपादम्	द्वन्द्व समास
(46) पीताम्बरं	पीतम् अम्बरम्	कर्मधाराय समास
(47) प्रतिकूलम	कूलं कूलं प्रति	अव्ययीभाव समास
(48) कृष्णसर्पः	कृष्णः सर्पः	कर्मधाराय समास
(49) धनश्यामः	घन इव श्यामः	कर्मधाराय समास
(50) पार्वती च परमेश्वरः च	पार्वतीपरमेश्वरौ	द्वन्द्व समास
(51) सचक्रम	चक्रेण सहितम्	अव्ययीभाव समास
(52) मुखकमलम्	मुखं कमलम इव	कर्मधाराय समास
(53) हयाश्च नागाश्च	हयनागाः	द्वन्द्व समास
(54) दुष्टहृदय	दृष्टं हृदयं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
(55) हरिश्च हरश्च	हरिहरौ	द्वन्द्व समास

शेखावाटी मिशन–100

समास के महत्वपूर्ण उदाहरण

पद	समास विग्रह	समास का नाम
(1) धनुष्पाणिः (राम)	धनुः पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि समास
(2) रघुकुलजन्मा (राम)	रघुकुले जन्म यस्य सः	बहुव्रीहि समास
(3) त्रिफला	त्रयाणां फलानाम् समाहारः	द्वगु समास
(4) शताब्दी	शताम् अब्दानां समाहारः	द्वगु समास
(5) सप्ताहः	सप्तानाम् अह्नां समाहारः	द्वगु समास
(6) विद्याधनम्	विद्या एव धनम्	कर्मधारय समास
(7) पुरुषव्याघ्रः	पुरुषः व्याघ्रः इव	कर्मधारय समास
(8) वज्रकठोरम्	वज्रम् इव कठोरम्	कर्मधारय समास
(9) कुसुमकोमलम्	कुसुमम् इव कोमलम्	कर्मधारय समास
(10) रक्तकमलम्	रक्तम् कमलम्	कर्मधारय समास
(11) श्वेतवस्त्रम्	श्वेतम् वस्त्रम्	कर्मधारय समास
(12) उन्नतवृक्षः	उन्नतः वृक्षः	कर्मधारय समास
(13) कुराजा	कुत्सितः राजा	कर्मधारय समास

शेखावाटी मिशन–100

कारक प्रकरणम्

कारक प्रकरणम्

प्रश्नः– रेखांकित पदे विभक्तिः तत् कारणं लिखत्–

	उदाहरणम्	विभक्तिः	कारणम्
(1)	नदी क्रोश कुटिला अस्ति।	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यंतसंयोगे इति सूत्रेण
(2)	राजमार्गम् अभितः वृक्षाः सन्ति।	द्वितीया	अभितः योगे
(3)	ग्रांम परितः क्षेत्राणि सन्ति।	द्वितीया	परितः योगे
(4)	विद्यालयम् निकषा देवालयः अस्ति।	द्वितीया	निकषा योगे
(5)	प्रदीपः पुस्तकं विना पठति।	द्वितीया	विना योगे
(6)	रामं श्यामं च अन्तरा देवदत्तः अस्ति।	द्वितीया	अन्तरा योगे
(7)	दुष्टं धिक्।	द्वितीया	धिक योगे
(8)	हा दुर्जनम्।	द्वितीया	हा योगे
(9)	छात्राः विधालयं प्रति गच्छन्ति।	द्वितीया	प्रति योगे

(10)	राजपुरुषः चौरम् अनु धावति।	द्वितीया	अनु योगे
(11)	गणेशः वनं यावत् गच्छति।	द्वितीया	यावत् योगे
(12)	भूमिम् अधोऽधः जलम् अस्ति।	द्वितीया	अधोऽधः योगे
(13)	सुरेशः शय्याम् अधिशेते।	द्वितीया	अधिशेते योगे
(14)	नृपः सिंहासनम् अध्यास्ते।	द्वितीया	अध्यास्ते योगे
(15)	गोपालः गां दुग्धं दोग्धि।	द्वितीया	दुह् योगे
(16)	हरिः वैकुण्ठम् आवसति।	द्वितीया	आवसति योगे
(17)	सुरेशः महेशं पुस्तक याचते।	द्वितीया	याच योगे
(18)	पाचकः तण्डुलान् ओदनं पचति।	द्वितीया	पच् योगे
(19)	सः माणवकं पन्थानं पृच्छति।	द्वितीया	प्रच्छ् योगे
(20)	नृपः शत्रुं राज्यं जयति।	द्वितीया	जी योगे
(21)	सः अजां ग्रामं नयति।	द्वितीया	नी योगे
(22)	कृषकः क्षेत्रं महिषीं कर्षति।	द्वितीया	कृष् योगे
(23)	पिता पुत्राय क्रुध्यति।	चतुर्थी	क्रुध् योगे
(24)	किंकरः नृपाय द्रुह्यति।	चतुर्थी	द्रुह योगे
(25)	दुर्जनः सज्जनाय ईर्ष्यति।	चतुर्थी	ईर्ष्य् योगे
(26)	सुरेशः महेशाय असूयति।	चतुर्थी	आसूय् योगे
(27)	रामाय नमः।	चतुर्थी	नमः योगे
(28)	गणेशाय स्वस्ति।	चतुर्थी	स्वस्ति योगे
(29)	प्रजापतये स्वाहा।	चतुर्थी	स्वाद्य योगे
(30)	दैत्येभ्यः हरिः अलम्।	चतुर्थी	अलम् योगे
(31)	शिष्यः गुरवे निवेदयति।	चतुर्थी	निवेदय् योगे
(32)	साधुः सज्जनाय उपदिशति।	चतुर्थी	उपदिश् योगे
(33)	ज्ञानात् ऋते मुक्तिः न भवति,।	पंचमी	ऋते योगे
(34)	छात्राः विद्यालयात् बाहिः गच्छन्ति।	पंचर्मी	बहि योगे
(35)	यशवन्तः पठनात् अनन्तरं क्रीडाक्षेत्रं गच्छति।	पंचमी	अनन्तरं योगे
(36)	वृक्षस्य अद्यः बालकः शेते।	षष्ठी	अधः योगे
(37)	भवनस्य उपरि खगाः सन्ति।	षष्ठी	उपरि योगे
(38)	नगरस्य समीपं ग्रामः अस्ति।	षष्ठी	समीपम् योगे

शेखावाटी मिशन–100

(39)	<u>बालकस्य</u> कृते दुग्धम् आनय।	षष्ठी	कृते योगे
(40)	बालकस्य <u>पितरि</u> श्रद्धा अस्ति ।	सप्तमी	श्रद्धा योगे
(41)	महेशस्य <u>स्वमित्रे</u> विश्वासः अस्ति।	सप्तमी	'विश्वासः' योगे
(42)	<u>ग्रामं</u> परितः क्षेत्राणि सन्ति।	द्वितीय	'परितः' योगे
(43)	<u>कविषु</u> कालिदासः श्रेष्ठः।	सप्तमी	'यतश्च निर्धारणम्' सूत्रेण
(44)	<u>हरये</u> रोचते भक्तिः।	चतुर्थी	रुच् धातोः योगे योगे
(45)	हरिः <u>वैकुण्ठम्</u> अधिशेते।	द्वितीया	'अधि+शीङ्' योगे
(46)	कृषकः <u>ग्रामम्</u> अजां नयति।	द्वितीया	नी धातोः योगे
(47)	साधुः <u>कर्णाभ्याम्</u> बधिरः अस्ति।	तृतीया	'येनाङ्गविकार' सूत्रेण
(48)	<u>हिमालयात्</u> गंगा प्रभवति।	पंचमी	'भूवः प्रभवः' सूत्रेण
(49)	रामः <u>श्यामाय</u> शतं धारयति।	चतुर्थी	'धारेरुत्तमर्ण' सूत्रेण
(50)	<u>हनुमते</u> नमः।	चतुर्थी	'नमः' योगे
(51)	<u>जलं</u> विना जीवनं नास्ति।	द्वितीया	'विना' योगे
(52)	पार्वती 'नमः <u>शिवायः</u>' इति जयम अकरोत्।	चतुर्थी	नमः योगे
(53)	<u>मन्दिरम्</u> उपर्युपरि ध्वजः विद्यते।	द्वितीया	उपर्युपरि योगे
(54)	<u>ग्रामं</u> परितः क्षेत्राणि सन्ति।	द्वितीया	परितः योगे
(55)	सीता <u>गीतया</u> सह पठित।	तृतीया	सह योगे
(56)	<u>नगरात्</u> पृथक आश्रमः अस्ति।	पंचमी	पृथक योगे
(57)	<u>राजमार्गम्</u> अभितः वृक्षा सन्ति।	द्वितीया	अभितः योगे
(58)	रामः <u>लक्ष्मणेन</u> सह वनं गच्छति।	तृतीया	सह योगे
(59)	पिता <u>पुत्राय</u> कुध्यति।	चतुर्थी	क्रुध् योगे

प्रत्यय प्रकरणम

परीक्षापयोगी महत्वपूर्ण(उत्तराणि)

(1) श्रीधरः ....आसीत् + (धन+इनि) = धनी

(2) .... बालाः पाठं पाठयति (शिक्षक+टाप्) = शिक्षिका

(3) सा <u>बुद्धिमती</u> अस्ति। = बुद्धि + मतुम्।

(4) शिवस्य पत्नी <u>पार्वती</u> अस्ति। = पार्वत + ङीप।

शेखावाटी मिशन–100

(5) प्रसन्नो बालकः .... (शंक् +शानच्) = शंकमानः

(6) .... गोपालः गच्छति। (पठ् + शत्) = पठन्

(7) ज्ञानवान् सर्वत्र पूज्यते। = ज्ञान + मतुप्।

(8) चटका वृक्षे तिष्ठति। = चटक + टाप्।

(9) मनसा सततं .... । (स्मृ+अनीयर) = स्मरणीयम्

(10) ग्रामं .... तृणं पश्यति। (गम्+शतृ) = गच्छन्

(11) वचने का दरिद्रता। = दरिद्र + तल्।

(12) बालिका पुस्तक पठति। = बालक + टाप् ।

(13) लोकहिते मम .... । (कृ + अनीयर) = करणीयम्

(14) लोके .... दुर्लभम् (नर +त्व) = नरत्वं

(15) सा .... मधुर गायति। (बालक + टाप्) = बालिका

(16) अस्माभि सदैव अनुशासन ....। (पाल् + अनीयर) = पालनीयम्

(17) जीवने परिश्रमस्य .... भवति। (महत् + त्व) = महत्वं

(18) तस्य माता .... अस्ति। (चतुर +टाप्) = चतुरा

(19) .... बालकाः पश्यति। (गम् + शतृ) = गच्छन्तः

(20) .... धावकः मार्गे अपतत्। (धाव् + शृतृ) = धावन्

(21) इदं मधुरं दुग्ध ....। (पा + अनीयर) = पानीयम्

(22) नगरे .... वसति। (जन् +तल्) = जनता

(23) मुनिः पुनरपि विशदी .... अकथयत्। (कृ+शतृ) = कुर्वन्

(24) इदं .... कार्यम् न अस्ति। (समाज + ठक्) = सामाजिकम्

(25) मनुष्यः .... प्राणी अस्ति। (समाज + ठक्) = सामाजिकः

(26) .... इयं बालिका। (कुमार+ङीप्) = कुमारी

(27) अस्मांक देशे .... स्थानानि सन्ति। (दृश+अनीयर) = दर्शनीयानि

(28) दुष्टाः जनाः .... । (हन्+तव्यत्) = हन्तव्याः

(29) अस्माकं जीवने विद्यायाः .... वर्तते। (महत्+त्व) = महत्वं

(30) अस्याः .... दीपिका अस्ति। (अनुज+टाप्) = अनुजा

(31) तनयः तत्र .... अध्ययने संलग्नः समभूत्। (वस + शत्) = वसन्

(32) आदिश्यतां किं .... । (कृ + अनीयर) = करणीयम्

(33) .... । स्वागतं ते। (श्रेष्ठ + इनि) = श्रेष्ठिन्

(34) व्याघ्रं दृष्टवा सा .... । (चिन्तितवत् + ङीप्) = चिन्तितवती।

शेखावाटी मिशन–100

1. **शतृ प्रकृति प्रत्यय उदाहरण–**

प्रकृति		प्रत्यय		शब्द	पुरुष	स्त्री.	नपु.
पठ्	+	शतृ	=	पठत्	पठन्	पठन्ती	पठत्
अस्	+	शतृ	=	सत्	सन्	सती	सत्
लिख्	+	शतृ	=	लिखत्	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
दृश्	+	शतृ	=	पश्यत्	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
गम्	+	शतृ	=	गच्छत्	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
नी	+	शतृ	=	नयत्	नयन्	नयन्ती	नयत्
दा	+	शतृ	=	यच्छत्	यच्छन्	यच्छन्ती	यच्छत्
नृत्	+	शतृ	=	पिबत्	पिबन्	पिबन्ती	पिबत्
पृच्छ्	+	शतृ	=	पृच्छत्	पृच्छन्	पृच्छन्ती	पृच्छत्

2. **शानच् प्रत्यय उदाहरणः–**

प्रकृति		प्रत्यय	पुरुष	स्त्री.	नपु.
सेव्	+	शानच्	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
मुद्	+	शानच्	मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्
वृत्	+	शानच्	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
लभ्	+	शानच्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
यज्	+	शानच	यजमानः	यजमाना	यजमानम्

3. **तव्यत्– प्रत्यय उदाहरण**

धातुः		प्रत्यय	पुरुष	स्त्री.	नपु.
कृ	+	तव्यत्	कर्त्तव्यः	कर्तव्या	कर्त्तव्यम्
क्री	+	तव्यत्	क्रेतव्यः	क्रेतव्या	क्रेतव्यम्
दृश्	+	तव्यत्	द्रष्टव्यः	द्रष्टव्या	द्रष्टव्यम्
नम्	+	तव्यत्	नन्तवयः	नन्तव्या	नन्तव्यम्
हन्	+	तव्यत्	हन्तव्यः	हन्तव्या	हन्तव्यम्
श्रु	+	तव्यत्	श्रोतव्यः	श्रोतव्या	श्रोतव्यम्

4. **अनीयर–प्रत्यय उदाहरण**

धातुः	प्रत्यय	पुरुष	स्त्री.	नपु.

शेखावाटी मिशन–100

पठ्	+	अनीयर्	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्
दा	+	अनीयर्	दानीयः	दानीया	दानीयम्
कृ	+	अनीयर्	करणीयः	करणीया	करणीयम्
हन्	+	अनीयर्	हननीयः	हननीया	हननीयम्
गम्	+	अनीयर्	गमनीयः	गमनीया	गमनीयम्
पा	+	अनीयर्	पानीयः	पानीया	पानीयम्
श्रु	+	अनीयर्	श्रवणीयः	श्रवणीया	श्रवणीयम्
स्था	+	अनीयर्	स्थानीयः	स्थानीया	स्थानीयम्

5. मतुँप प्रत्यय उदाहरण

धातुः		प्रत्यय		नपु.	पु.	स्त्री
गुण	+	मतुप्	=	गुणवत्	गुणवान्	गुणवती
रूप	+	मतुप्	=	रूपवत्	रूपवान्	रूपवती
ज्ञान	+	मतुप्	=	ज्ञानवत्	ज्ञानवान्	ज्ञानवती
श्री	+	मतुप्	=	श्रीमत्	श्रीमान्	श्रीमति
बुद्धि	+	मतुप्	=	बुद्धिमत््	बुद्धिमान	बुद्धिमती
आयुस्	+	मतुप्	=	आयुष्मत्	आयुष्मान्	आयुष्मती

6. इन प्रत्यय उदाहरण–

शब्द		इन प्रत्ययः	इनिप्रत्ययान्तः	पु. शब्दरूप
दण्ड	+	इन्	दण्डिन्	दण्डी
बल	+	इन्	बलिन्	बली
गुण	+	इन्	गणिन्	गुणी
सुख	+	इन्	सुखिन्	सुखी

7. ठन् प्रत्यय उदाहरण

शब्द		ठन् प्रत्यय	ठन प्रत्यान्त	पु.रूप
धन	+	ठन् (इक)	धनिक	धनिकः
माया	+	ठन् (इक)	मायिक	मायिकः
चर्मन्	+	ठन् (इक)	चर्मिक	चर्मिकः
वर्मन्	+	ठन् (इक)	वर्मिक	वर्मिकः

8. त्व तथा तल् प्रत्यय उदाहरण–

शब्द		त्व/तल् प्रत्ययः	त्व प्रत्ययान्तरूपः	तल् प्रत्ययान्तरूप
मनुष्य	+	त्व/तल्	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
गुरु	+	त्व/तल्	गुरुत्वम्	गुरुता
लघु	+	त्व/तल्	लघुत्वम्	लघुता
कृष्ण	+	त्व/तल्	कृष्णत्वम्	कृष्णता
जड़	+	त्व/तल्	जड़त्वम्	जड़ता
कवि	+	त्व/तल्	कवित्वम्	कविता
पटु	+	त्व/तल्	पटुत्वम्	पटुता

9. टाप् प्रत्ययः उदाहरण

शब्द + टाप् प्रत्ययः	टाप्प्रत्ययान्तः शब्दः
अजा + टाप्	अजा
ज्येष्ठ + टाप्	ज्येष्ठा
शूद्र + टाप्	शूद्रा
चटक + टाप्	चटका
वत्स + टाप्	वत्सा
मूषक + टाप्	मूषिका
बालक + टाप्	बालिका
साधक + टाप्	साधिका

10. ङीप प्रत्ययः उदाहरण

शब्दः + ङीप् प्रत्ययः		ङीबन्ताः शब्दः
श्रीमतुप् – श्रीमत्	+ ङीप	श्रीमती
बुद्धिमतुप् – बुद्धिमत्	+ ङीप	बुद्धिमती
रूपमतुप् – रुपवत्	+ ङीप	रूपवती
पचन्तृ – पचन्	+ ङीप	पचन्ती
कुमार + ङीप		कुमारी
किशोर + ङीप		किशोरी
अष्टाध्याय + ङीप		अष्टाध्यायी

शेखावाटी मिशन–100

वाच्य परिवर्तन

प्र:1 अधोलिखितानां वाक्यानां वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–

–	**कृर्तवाच्यम्**	**कर्मवाच्यम**
(i)	सः पठति ।	तेन पठ्यते।
(ii)	भवान् पठति।	भवता पठ्यते ।
(iii)	अहं श्लोकं पठामि।	मया श्लोकः पठ्यते।
(iv)	वयम् पठामः।	अस्माभिः पठ्यते।
(v)	त्वम् चित्रं पश्यति।	त्वया चित्रं दृश्यते।
(vi)	रामः गृहं गच्छति।	रामेण गृहं गम्यते।
(vii)	मोहनः कन्दुकम् क्रीडति।	मोहनेन कन्दुकं क्रीडयते।
(viii)	सः रोटिकां खादति।	तेन रोटिका खाद्यते।
(ix)	छात्रः ग्रन्थं पठति।	छात्रेण ग्रन्थः पठ्यते।
(x)	गायकः गीतं गायति।	गायकेन गीतं गीयते।
(xi)	सः जलम् पिबति।	तेन जलम् पीयते।
(xii)	लता पाठं पठति।	लतया पाठं पठ्यते
(xiii)	शिक्षकः लेखं लिखति।	शिक्षकेन लेख : लिख्यते ।
(xiv)	बालः नाटकं पश्यति।	बालेन नाटकं दृश्यते।
(xv)	सः पत्रं पठति।	तेन पत्रं पठ्यते ।
(xvi)	गोपालः पाठं लिखति।	गोपालेन पाठः लिख्यते ।
(xvii)	सः प्रश्न पृच्छति।	तेन प्रश्नं पृच्छयते।
(xvii)	गोपालः अजां ग्रामं नयति	गोपालेन अजा ग्रामं नीयते।
(xviii)	अहं लेखं लिखामि	मया लेखं लिख्यते ।
(xix)	त्वम् गच्छसि	त्वया गम्यते।
(xx)	सः आपणं गच्छति	तेन आपणं गम्यते।
(xxi)	रामः कार्य करोति।	रामेण कार्यं क्रियते।
(xxii)	रमा चित्रं पश्यति	रमया चित्रम् दृश्यते।
(xxiii)	रामः रावणं हन्ति।	रामेण रावणः हन्यते ।
(xxiv)	सः प्रश्नं पृच्छति	तेन प्रश्नः पृच्छ्यते।
(xxv)	ते हसन्ति	तैः हस्यते।

शेखावाटी मिशन–100

(xxvi) वयं विद्यालयं गच्छामः — अस्माभिः विद्यालयं गम्यते।

(xxvii) बालाः कोलाहलं कुर्वन्ति — बालैः कोलाहलः क्रियते।

(xxviii) बालकः हसति — बालकेन हस्यते

(xxix) छात्राः गुरुः नमन्ति। — छात्रैः गुरूः नम्यते।

समयलेखनम्

(सपाद (15) – सार्ध (30) –पादोन (45)

(i) अहं प्रातः (5.15) . ... वादने उत्तिष्ठामि।

(ii) मोहन : (9.30) . ... वादने विद्यालयं गच्छति।

(iii) बालकाः सायं (3.45) . ... वादने क्रीडन्ति।

(iv) वयं रात्रौ (10.00) .... वादने शयनं कुर्मः।

(v) सीता प्रातः (6.30) .... वादने उत्तिष्ठति।

(vi) रामः अपराह्णे (12–30) .... वादने सः भोजनं करोति

(vii) अस्माकं विद्यालये (1–00) .... वादने मध्यान्तरं भवति ।

(viii) अविनाशः (2.30) .... गृहं आगच्छति।

(ix) मम जनकः (4.15) .... जयपुरं गमिष्यति।

(x) सोहनः (2.30) .... वादने क्रीडायै गच्छामि।

(xi) विद्यालयं (10.15) .... वादने दीपप्रज्वालन सरस्वतीवनाया

(xii) संस्कृत समाचारः प्रतिदिनं प्रातः (6.45) .... आगच्छाति।

(xiii) अहं प्रातः (7.15) .... विद्यालयं गच्छामि।

(xiv) छात्राः प्रातः (11:00) .... भोजनं कुर्वन्ति ।

(xv) अहं सायं (4:30) .... वादने लेखं लिखामि

उत्तर– (i) सपादपञ्च (ii) सार्धनव (iii) पादोन चतुर् (iv) दश

(v) सार्ध–षड् (vi) सार्ध–द्वादश (vii) एक (viii) सार्ध–द्विवादने

(ix) सपाद चतुर्वादने (x) सार्ध–द्वि (xi) सपाद–दश (xii) पादोन सप्तवादने

(xiii) सपादसप्तवादने (xiv) एकादशवादने (xv) सार्धचतुर्

अव्यय प्रकरणम्

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ।।

तीनों लिगों में, सभी विभक्तियों और सभी वचनों में जो समान ही रहता है। रूप में परिवर्तन नहीं होता वह अव्यय होता हैं।

सामान्य – परिचयम

वाक्ये अव्ययानां प्रयोगः।।

नूनं सः सत्यं वदति ।.

वृक्षस्य उपरि खगाः तिष्ठन्ति।,

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ।

त्वम् एव माता च पिता त्वमेव।

अहं श्वः जयपुरं गमिष्यामि।

वृक्षस्य अधः जनाः सन्ति।

सहसा कदापि कार्याणि न कुर्यात्।

परिश्रमं विना कुत्र साफल्यम्।

पुरा संस्कृतं जनभाषा आसीत।

क्रियां विना नरः अकर्मण्यः भवति।

नीचैः विघ्न भयेन खलु न प्रारभ्यते।

सः उच्चैः अहसत्।

यथा राजा तथा प्रजा भवति।

कदापि असत्यं मा वदतु।

सिंहः उच्चैः गर्जति।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गाद् अपि गरीयसी।

सदा सत्यम् एव विजयति।

पुरा संस्कृतं जनभाषा आसीत्।

क्रियां विना ज्ञानं भारः।

न प्रयोजनमन्तरा चाणक्यः स्वप्नेऽपि चेष्टते।

पुरा पाटिलिपुत्रनगरे नन्दः नाम राजा आसीत।

ग्रामाद् बहिः उद्यानमस्ति।.

ज्ञानं बिना न मुक्तिः।

यदा मेधाः गर्जन्ति तदा वर्षा भवति।.

अलं क्रोधेन। अलं कलहेन।.

विद्यालये अद्य वार्षिकोत्सवः अस्ति।

सदा सत्यम् एव विजयति।

कर्मणा एव नरः पूज्यते।

धिक् मूर्खम्

पुरा दशरथः नाम राजा आसीत्।

धनं विना जीवनं व्यर्थम्।

यत्र–यत्र धूमः तत्र–तत्र अग्निः।

गजः शनैः शनैः चलति।

ईश्वरः सर्वत्र व्यापकः अस्ति।.

ग्रामात् बहिः नही प्रवहति।

यथा गुरुः तथा शिष्यः।

शशिना सह याति कौमुदी।

अन्तरा त्वां मां हरिः।

नीरीं विना निष्फला लोकयात्रा।

शेखावाटी मिशन–100

प्रवृतिसाराः खलु मादृशां गिरः।

अर्जुनः तूष्णीं बभूव।

नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

विपदि उच्चैः धैर्यम्।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्।

नद्याः जलं नीचैः गच्छति।

भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।

प्रार्थना पत्र एवं पत्रम्

भवान् देवगढ़ग्रामवासिन राजेन्द्रं स्वकीयः सखा अंकित प्रति संस्कृतभाषाशिक्षणम् इति विषये अधोलिखितं पत्र मञ्जूषापदसहायता पूरयित्वा लिखतु।

मञ्जूषा – देवगढ़ग्रामः, अस्माकम् इच्छति, रेखा, पृथक पठित्वा प्राप्तम, सुगन्धम्

(i) ....

दिनांकः 18–3–20......

प्रिये अंकित!

नमस्ते।,

भवते पत्रं (ii) पठितुम् (iii) .... एषा भाषा वैज्ञानिकी संस्कृतम् (iv)............ देशस्य प्रसिद्धा भाषा। भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतं (v) .... कर्तुं तथैव न शक्यते यथा पुष्पेभ्य (iv) ....।

अतः भवता अपि संस्कृतं पठतु एवं च (viii) .... प्रचारं करोतु।

भवत्याः प्रिय सखा

(viii) ....

(i) देवगढ़ग्रामतः

(ii) प्राप्तम

(iii) इच्छति

(iv) अस्माकं

(v) पृथक

(vi) सुगन्धम्

(vii) पठित्वा

(viii) राजेन्द्र।

प्रधानाचार्य आवश्यक कार्यवशात् दिनत्रयस्य अवकाशार्थ प्रार्थनापत्रं लिखतः।

सेवायाम्,

शेखावाटी मिशन–100

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयाः,

राजकीय–उच्चमाध्यामिक विद्यालयः,

भरतपुरस्य।

विषयः दिनत्रयस्य अवकाशार्थं प्रार्थना–पत्रम्।

महोदयः,

सविनयं निवेदयामि यत् मम गृहे अत्यावश्यक कार्य वर्तते। अतः अहं विद्यालयम् आगन्तुं समर्थः नास्मि । प्रार्थना आस्ति यत् 6–8–20........... तः 8–8–20.......... दिनॉक पर्यन्त त्रयदिनस्य अवकाश स्वीकृत्य माम् अनुग्रहीष्यन्ति।

दिनॉकः– 5–8–20.

भवताम् आज्ञाकारी शिष्य

नाम–गणेश।

कक्षा– दशमी

:प्रः5 भवान् राजकीय–उच्च माध्यमिक विद्यालय – जोधपुरस्य दशमकक्षाया छात्रः अभिषेकः अस्ति। ज्येष्ठभ्रातुः विवाहकारणात् दिनद्वयस्य अवकाशार्थं प्रार्थना–पत्रं प्रधानाचार्य प्रति लिखत।

सेवायाम्,

श्रीमान्तः प्रधानाचार्य महोदयाः,

राजकीयः उच्च माध्यामिक विद्यालयः

जोधपुरस्य।

विषयः– ज्येष्ठभ्रातु विवाहकारणात् दिनद्वयस्य अवकाशार्थ प्रार्थना–पत्रं।

महोदयः,

सविनयं निवेदनम् आस्ति। यत् मम ज्येष्ठभ्रातुः पाणिग्रहण–संस्कारः 17–7–20..... दिनॉक निश्चितः। एतत् कारणात् दिनद्वयं यावद् अहं स्वकक्षायामुपस्थातुं न शक्नोमि।

अतः निवेदनमास्ति यत् 17–7–20........... दिनॉकः तः 18–7–20... दिनॉक पर्यन्तं द्विनद्वयस्य अवकाशं स्वीकृत्य माम अनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः।

सधन्यवादम्।

भवदीयः शिष्यः

दिनॉकः– 15–9–20.............

नामः– अभिषेक

कक्षा दशमी

प्रः2 परीक्षायाँ सफलतायै स्वमित्रं प्रदीपकुमार प्रगति अधोलिखितमपूर्णं वर्धापन्नपत्र मञ्जूषायां प्रदत्तपदसहायतया पूरयित्वा पुनः उत्तरपुस्तिकायां लिखत।

कुशालं, अधिगतवान्, एवमेव, प्रणामं, परीक्षायाम् वर्धापन्नं, सुहृद्वर्य, जयपुरतः,

(i)..............

दिनॉकः–20–01–20...

अभिन्नहृदय (ii) .... ।

सप्रेम नमस्ते।

अत्र (iii) .... तत्रास्तु। अद्यैव तव पत्रं प्राप्तम्। त्वं प्रथम् श्रेण्यां (iv) .... उत्तीर्य योग्यता–सूच्यां प्रथम स्थानम् (v) .... इति पठित्वा हर्षमनुभवामि। तव प्रयासः सर्वथा साधुवादार्हः। मम (vi) .... (बधाई) स्वीकरोतु। आशासे अग्रेऽपि (vii) .... स्तुत्यप्रयासं करिष्यति। स्वपितृभ्यां मम (viii) .... निवेदय।

तव स्निग्धं मित्रम्

आशीषः

(i) जयपुरतः (ii) सहृद्वर्य (iii) कुशलं (iv) परीक्षायाम् (v) अधिगतवान्

(vi) वर्धापन्न (vii) एवमेव (viii) प्रणामं

प्रार्थना–पत्र

प्रः1 भवान् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय–भरतपुरस्य दशम्याः कक्षायाः रमेशः आस्ति। भवान् अतः स्वप्रधानाचार्याय दिनद्वयस्य रूग्णतावकाशार्थ प्रार्थनापत्रं लिखतु।

सेवायाम्,

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयाः,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

भरतपुरम् ।

विषय = दिनद्वयस्य अवकाशार्थ प्रार्थना–पत्रम्।

महोदयः

सविनयं निवेदयामि यत् अद्य अहं शीतज्वरेण पीडितोऽस्मि। अस्मात् कारणात् अहं दिद्वयस्य यावत् विद्यालये उपास्थातुं न शक्नोमि। अतः प्रार्थये यत् दि. 29.12.2025 तः 30.12.2025 पर्यन्त दिनद्वयस्य अवकाशं स्वीकृत्य मामनुगृहीष्यान्ति भवन्तिः।

दिनॉकः 29.12.20.......................

भवदाज्ञाकारी शिष्याः

नाम–सुरेश

कक्षा–दशमी

प्र:2 स्वं राकेश मत्वा राजकीय उच्च माध्यामिक विद्यालयस्य भरतपुस्य प्रधानाचार्याय स्थानानारण के प्रमाणपत्रप्राप्त्यर्थम् संस्कृत प्रार्थनापत्रमेकं लिखतु।

सेवायाम्,

श्रीमन्तः प्रधानाध्यापकमहोदयाः,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयः,
भरतपुरम।

विषयः– स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र–प्राप्यर्थम्।

महोदय:

निवेदनस्ति यद् मम पूज्यपितुः स्थानान्तरण बीकानेरनगरे सञ्जातम् अस्मात्कारणात् वयं सर्वेऽपि पारिवारिकजनाः तत्रैव गमिष्यावः। ममापि तैः सह तत्र गमनं निश्चितमेव। अतः सम्प्रति अहमत्र पठितुं असमर्थोऽस्मि।

अतः प्रार्थना अस्ति यन्महयं स्थानान्तरण प्रमाणपत्र प्रदाय अनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः। ममः पितुः स्थानानारणस्य राज्यादेशप्रतिलिपिः भवतामवलोकनार्थ संलग्ना अस्ति।

दिनांक– 24 जनवरी 2025

भवदाज्ञाकारी शिष्यः
नाम :–सुरेशः
कक्षाः– दशमी

भवान राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय–जयपुरस्य दशमकक्षायाः छात्रः सुरेश अस्ति। स्वस्य प्रधानाचार्याय शुल्कमुक्त्यर्थम् एक प्रार्थनापत्रं लिखतु।

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्या महोदया,
राजकिय आदर्श उच्च–माध्यमिक विद्यालय,
जयपुरस्य।

विषयः–शुल्कमुक्त्यर्थं प्रार्थना–पत्रम्।

महोदयः,

निवेदनमस्ति यदहं भवतां विधालये दशम्या कक्षायां पठामि। मम पिता अतीव निर्धनः अतः मम परिवारस्य आर्थिकदशा समीचीना, नास्ति। निर्धनताकारणात् मम पिता मदीयं विद्यालयशुष्क प्रदानार्थं सक्षमो नास्ति, किन्तु मम अध्ययनस्य रुचिः वर्तते। अतः एवं प्रार्थना वर्तते यन्मम निर्धनतां स्वाध्ययने च रुचिं विलोक्य शिक्षणशुल्कात् सर्वथामुक्तिं प्रदास्यन्ति श्रीमन्तः

दिनांक 15–7–20..............................

भवदाज्ञाकारी शिष्यः
नाम–सुरेश
कक्षा–दशमी

वार्तालाप

वार्तालाप लेखनम

1. मञ्जूषायाः उचितपदैः 'ग्रीष्मावकाश' इति विषये वार्तालाप पूरयत –

[गतमासे, मया, तत्र, अतिरमणीयः, त्वं, अपश्यः, अगच्छम्, कदा]

विजयः – अजय! ग्रीष्मावकाशे (i) .... कुत्र अगच्छः ?

अजयः – विजय! अहं ग्रीष्मावकाशे अरुणाचलप्रदेशम् (ii) ....!

विजयः – अहो (iii) .... सः प्रदेशः।

अजयः – आम्, (iv) .... याकपशुम् अपश्यम्।

विजयः – किं त्वं गोम्पामन्दिरं न (v) .... ?

अजयः – (vi) .... सह मम जननी जनकः च आस्ताम् । वयं सर्वे गोम्पामन्दिरं अगच्छाम ?

विजयः – यूयं (vii) .... ततः आगच्छत ?

अजयः – वयं (vii) .... एव आगच्छाम ।

उत्तरम (i) त्वं, (ii) अगच्छाम् , (iii) अतिरमणीयः, (iv) तत्र,
(v) अपश्यः, (vi) मया, (vii) कदा, (viii) गतमासे

2. मञ्जूषातः उचितानि पदानि गृहीत्वा 'धूम्रपान – निवारणाय' इति विषये गुरूशिषयोः वार्तालापं पूरयत –

[गन्तुम् , अस्य , तुभ्य , धूम्रपानं , स्वास्थ्य , प्रेरणीयाः , मया , दुर्व्यसनस्य]

सोहनं – गुरूवर! अहं पश्यामि विद्यालये केचन छात्राः (i) .... कुर्वन्ति।

गुरुः – वत्स ! धूम्रपान (ii) .... विनाशकमस्ति।

सोहनः – गुरुवर । कोऽस्य (iii) .... निवारणोपायः।

गुरूः – पुत्र ! जन – जागर्तिरेव (iv) .... दुर्व्यसनस्य निवारणोपायः।

सोहनः – गुरुवर ! (v) .... किं करणीयम?

गुरूः – त्वया छात्राः (vi) .... यत् अस्माभिः धूम्रपानं न करणीयम्।

सोहनः – गुरूवर! एवमेव करोमि। अधुना अहं (vii) .... इच्छामि।

गुरूः – वत्स! महत्वपूर्ण विषयोपरि वार्ता कर्तु (viii) .... धन्यवादं ददामि।

उत्तरम् (i) धूम्रपानं (ii) स्वास्थ्य (iii) दुर्व्यसनस्य (iv) अस्य
(v) मया (vi) प्रेरणीयाः (vii) गन्तुम् (viii) तुभ्यं

3. मञ्जूषायाः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा पितापुत्रयोः मध्ये योगदिवसविषये वार्तालापं पूरयतु –

[कुर्वन्ति , आगच्छ , जूनमासस्य , कार्यक्रमाः , शक्नोमि , अस्माकम् , योगदिवसे]

शेखावाटी मिशन–100

पुत्रः – भो पिताः! (i) .... 21 दिनांके कः दिवसः भवति?

पिता – अरे! तस्मिन दिने तु (ii) .... भवति।

पुत्रः – योगदिवसे (iii) .... भवन्ति।

पिता – (iv) .... विश्वेजनाः प्रणायामं व्यायामं च कुर्वन्ति।

पुत्रः – योगेन (v) .... स्वास्थ्यं सम्यक् भवति वा?

पिता – आम्। ये योगं (vi) .... ते रूग्णाः न भवन्ति।

पुत्रः – तर्हि अहम् अपि योगं कर्तुं (vii) .... वा?

पिता – किमर्थं न, (viii) .... आवां योगं करवाव।

उत्तर (i) जूनमासस्य (ii) अन्तराष्ट्रिययोगदिवस (iii) कार्यक्रमाः (iv) योगदिवसे

(v) अस्माकं (vi) कुर्वन्ति (vii) शक्नोमि (viii) आगच्छ।

छात्राध्यापकयोः वार्तालापः

4. **[संस्कृतस्य , उत्तीर्णः , निवसामि , प्रणमामि , रूचिः , भवान् , गतकक्षायां, अभ्युत्कर्षः]**

छात्रः – महोदय ! अहं भवन्तं (i) .... ।

अध्यापकः – भोः छात्र! भवतः नाम किम्?

छात्रः – महोदय! मम नाम (ii) .... अस्ति।

अध्यापकः – (iii) .... कुत्र निवसति?

अभ्युत्कर्षः – अहं अस्मिन्नैव नगरे (iv) .... ।

अध्यापकः – तव पितुः नाम किम्? किञ्च करोति?

अभ्युत्कर्षः – मम पितुः नाम श्री जितेन्द्रकुमारः अस्ति। सः च (v) .... व्याख्यातापदे कार्यं करोति।

अध्यापकः – कस्मिन विषये तव पठने सर्वाधिका (vi) .... अस्ति।

अभ्युत्कर्षः – संस्कृतविषये मम सर्वाधिका रूचिः अस्ति।

अध्यापकः – (vii) .... भवान् कस्यां श्रेण्याम् उत्तीर्णः अभवत्?

अभ्युत्कर्षः – गतकक्षायां अहं प्रथम श्रेण्याम् (viii) .... अभवम्।

उत्तर (i) प्रणमामि (ii) अभ्युत्कर्षः (iii) भवान् (iv) निवसामि (v) संस्कृतस्य

(vi) रूचिः (vii) गतकक्षायां (viii) उत्तीर्णः

5. **'शयन, जागरणयोः समयविषये वार्तालापः'**

[रात्रौ , शयनस्य , विलम्बात् , दशवादने , जागरणीयम् , शयनं , समुचितः, करोमि]

अध्यापकः – रमेश! अद्य (i) .... कथं आगतोऽसि?

रमेशः – अद्य मया प्रातः सप्तवादने (ii) .... जागृतम्।

अध्यापकः – अरे ! भवान् (iii) .... कदा शयनं करोति?

रमेशः – अहं रात्रौ द्वादशवादने शयनं (iv) .... ।

अध्यापकः – भो छात्राः! विलम्बात् न शयनीयम् न च (v) .... ।

छात्राः – महोदय! तर्हि (vi) .... जागरणस्य च कः समयः (vii) ....

अध्यापकः – भो छात्राः ! शयनस्य समयः रात्रौ (viii) .... जागरणस्य च समयः प्रातः पच्वादने अथवा सूर्यादयात् पूर्वमेव समयः समुचितः भवति।

छात्राः – वयम् एवमेव करिष्यामः

उत्तर (i) विलम्बात् (ii) शयनं (iii) रात्रौ (iv) करोमि (v) जागरणीयम्

(vi) शयनस्य (vii) समुचितः (viii) दशवादने

चित्र आधारित वर्णन

प्रः1 अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया स्वच्छता विषयेः अष्टवाक्यानि स्कृतभाषायां लिखत–

इतस्ततः, अभियानरूपेण, स्वच्छताकार्यक्रमस्यः, स्वस्थाः, सार्वजनिकस्थलानाम्,

रोगाः, स्वच्छताकार्यम्, दायित्वम्, सर्वे जनाः, सर्वत्र

उत्तरम्–वाक्यानि– (i) इदम् चित्रं स्वच्छताकार्यक्रमस्य वर्तते।

(ii) चित्रे छात्राः अन्ये जनाश्च स्वच्छताकार्यं कुर्वन्ति।

(iii) अद्य सर्वे जनाः अभियानरूपेण स्वच्छताकार्ये संलग्नाः सन्ति।

(iv) ते सार्वजनिकस्थलानां स्वच्छतां कुर्वन्ति। (v) सर्वत्र स्वच्छतायाः अस्माकं दायित्वम् अस्ति। (vi) अवकरपात्रेषु एव अवकरं स्थापनीयम्। (vii) अस्वच्छताकारणाद् बहवः रोगाः भवन्ति।

शेखावाटी मिशन–100

(viii) अस्माभिः सदैव सर्वत्र स्वच्छता करणीया।

प्र:2 अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया सड़कसुरक्षाविषये अष्टवाक्यानि संस्कृतभाषायां लिखत–

राजमार्गेषु, चतुष्पथेषु, तीव्रगत्या, असावधानतया, यातायातस्य नियमानाम्, नियन्त्रिताः, सड़कदुर्घटनायाः

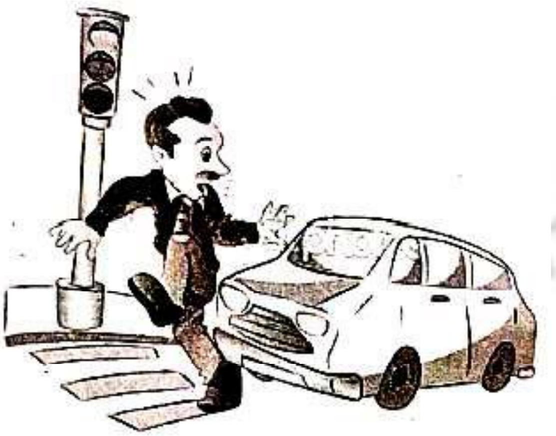

शेखावाटी मिशन–100

उत्तरम्–वाक्यानि– (i) इदं चित्रं सड़कदुर्घटनायाः वर्तते। (ii) तीव्रतया वाहनचालनेन दुर्घटना भवति।

(iii) वाहनस्य समुचितनियन्त्रणाभावेन दुर्घटना भवति। (iv) चतुष्पथेषु सावधानतया गन्तव्यम्।

(v) सड़कसुरक्षार्थ यातायातस्य नियमानां पालनं कर्तव्यम्। (vi) वाहनस्य गतिः नियन्त्रिता भवेत्।

(vii) राजमार्गेषु यातायातसंकेतानां पालनं करणीयम्। (viii) चतुष्पथेषु वाहनं तीव्रगत्या न चालयेत्।

प्र:3 अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया वाटिकायाः शोभा–विषये अष्टकावाक्यानि संस्कृतभाषायाम् लिखत–

वाटिका, वृक्षे, मन्धः, सायंकालः, चन्द्रः, बालकः, फलानि, लघुपादपाः. आसन्दिका, प्रातः, उत्पतन्ति, खगाः, अधः, पतन्ति, शोभा।

उत्तरम्–वाक्यानि–(i) अस्मिन् चित्रे वाटिका शोभते। (ii) चित्रे सायंकाले चन्द्रः दृश्यते।

(iii) वृक्षे वानरः फलानि खादति।

(iv) वाटिकायां मञ्चः बालकः, बालिका, लघुपादयाः च दृश्यन्ते।

(v) गगने खगाः उत्पतन्ति, फलानि च वृक्षात् अधः पतन्ति।

(vi) वाटिकायाम् एका आसन्दिका वर्तते, यत्र जनाः उपविशन्ति।

(vii) वाटिकायाः शोभा रमणीया वर्तते।

(viii) अत्र जनाः प्रातः सायंकालञ्च भ्रमणाय आगच्छन्ति।

प्रः4 अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया उपवनविषये संस्कृतभाषायाम् लिखत–

उपवनम्, पुष्पाणि, नारी, सूर्यः, खगाः, आकाशे, कलरवम्,

राजमार्गः, बालकः, बालिका, भ्रमन्ति।

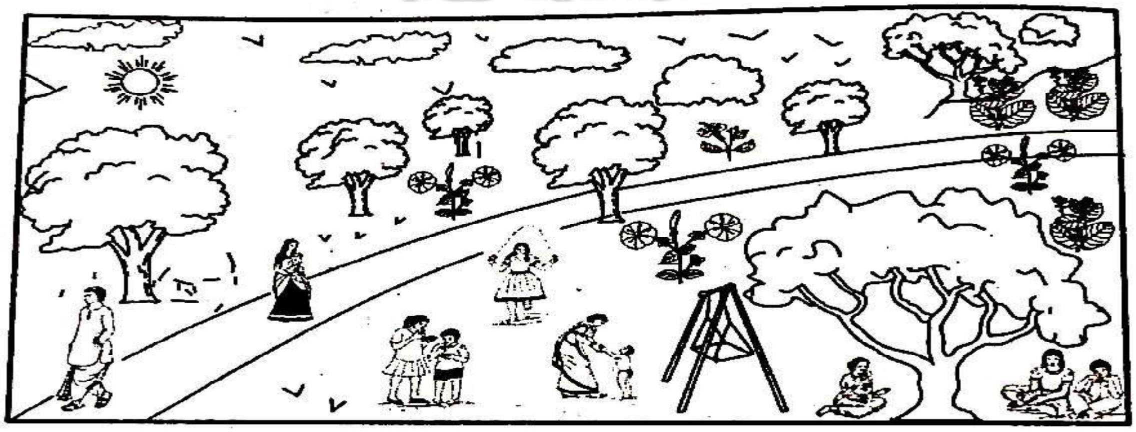

उत्तरम्–वाक्यानि– (i) अस्मिन् चित्रे रम्यम् उपवनम् अस्ति। (ii) उपवने बालकः, बालिका, नारी च भ्रमन्ति।

(iii) आकाशे सूर्यः खगाश्च सन्ति। (iv) अत्र पुष्पाणि अपि सन्ति।

(v) उपवने राजमार्गः अपि दृश्यते। (vi) उपवने बालिकाः दोलाधिरोहणं कुर्वन्ति।

(vii) अत्र विविधाः वृक्षाः सन्ति। (viii) अत्र विविधाः खगाः कलरवं।

प्रः5 चित्र दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया 'अस्माकं जीवने वृक्षानाणाम् उपयोगिता' इति ये अष्टवाक्यानि लिखतु।

अस्मिन् युगे, उपयोगिता, प्राणवायुं, पर्यावरणं, दृश्यते, फलानि, प्राप्नुमः,

छाया, काष्ठानि, मित्राणि, खगाः, वृक्षाणां, कर्तनं नैव।

उत्तरम्–वाक्यानि– (i) अस्मिन् युगे सर्वत्र पर्यावरणं प्रदूषितं दृश्यते।

(ii) पर्यावरणस्य शुद्धतायै वृक्षाणाम् उपयोगिता वर्तते।

(iii) वृक्षेभ्यः वयं प्राणवायुं फलानि छाया काष्ठानि च प्राप्नुमः। (iv) खगाः वृक्षेषु आश्रयं प्राप्नुवन्ति।

(v) अस्माकं जीवने वृक्षाणां बहुमहत्त्वं वर्तते। (vi) वृक्षाः एव मानवजीवनस्य प्राणभूताः सन्ति। (vii) वृक्षाणां कर्तनं नैव कर्तव्यम्। (viii) वस्तुतः वृक्षाः अस्माकं मित्राणि

हिन्दी से संस्कृत अनुवाद

हिन्दी से संस्कृत अनुवाद करना

(1) केशव धीरे–धीरे लिखता है। (2) रमेश ने आज नहीं पढ़ा।

(3) राजा राज्य की रक्षा करता है। (4) हम दोनों पाठशाला जाते है।

(5) तुम सब ईश्वर को प्रणाम करते हैं। (6) वे सब संस्कृत बोलते है।

उत्तरम्ः–

(1) केशवः शनैः शनैः लिखति। (2) रमेशः अद्य न पठितवान्।

(3) राजा, राज्यं रक्षति। (4) आवा पाठशालां गच्छावः।

(5) यूयम् ईश्वरं प्रणमथ। (6) ते संस्कृत वदन्ति।

(7) राधा भोजन पकाती है। (8) गाँव के चारों ओर खेत है।

(9) जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् है। (10) हिमालय से गंगा निकलती है।

(11) हम दोनों जल पीते है (12) जल के बिना जीवन सम्भव नहीं हैं।

उत्तरम्ः–

(7) राधां भोजन पचति । (8) ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति।

(9) जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। (10) हिमालयात. गङ्गा निर्गच्छति।

(11) आवां जलं पिबावः। (12) जलं विना जीवन सम्भवं नास्ति।

(13) माता पुत्र को उपदेश देती है। (14) गंगा हिमालय से निकलती है।

(15) कृष्ण के चारों ओर बालक है। (16) विद्या विनम्रता देती है।

शेखावाटी मिशन–100

उत्तरम्–(13) माता पुत्राय उपदिशति। (14) गङ्गा, हिमालयात, निर्गच्छति।

(15) कृष्णं परितः बालकाः सन्ति। **(16) विद्या ददाति विनयम्।**

(17) बालक वेदमन्त्र पढ़ता है (18) छात्रा कलम से पत्र लिखती है।

(19) मोहन राम के साथ जाता है। (20) विद्यालय के चारों और खेत है।

(21) रमेश सिंह से डरता है। (22) कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है।

उत्तरम्–

(17) बालकः बेदमन्त्रं पठति। **(18) छात्रा कलमेन पत्रं लिखति।**

(19) मोहनः रामेण सह गच्छति। **(20) विद्यालयं परित क्षेत्राणि सन्ति।**

(21) रमेशः सिंहात बिभेति **(22) कवीषु कालिदासः श्रेष्ठः।**

(23) अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कुहा। (24) मुझे फल अच्छे लगते है।

(25) तीन बालिकाएँ इधर देखती है। (26) कक्ष के बाहर शिक्षक है।

(27) उसके बिना तुम नहीं जाते हो। (28) उनके साथ सुनीता आई।

उत्तरम्–

(23) अर्जुनः श्रीकृष्णम् अकथयत **(24) मह्यम् फलानि रोचन्ते।**

(25) तिस्रः बालिकाः इतः पश्यन्ति। **(26) कक्षात बहिः शिक्षकाः सन्ति।**

(25) तं विना त्वम न गच्छसि। **(28) तैः सह सुनीता आगच्छत्।**

(29) तुम भी जाओ। (30) दस बज गए है।

(31) मैं गणित व विज्ञान पढ़ता हूँ। (32) मित्र को दूध अच्छा लगता है।

(33) मैं ज्ञानी हूँ। (34) शिष्य गुरू से निवेदन करता है।

(35) वह प्रकृत्ति से साधु है।

उत्तरम्–

(29) त्वम् अपि गच्छ। **(30) दशवादनं, जातम्।**

(31) अहं गणितं विज्ञानं च पठामि। **(32) मित्राय दुग्धं रोचते।**

(33) अहं ज्ञानी अस्मि। **(34) शिष्यः गुरवे निवेदयति।**

(35) सः प्रकृत्या साधुः अस्ति।

शेखावाटी मिशन–100

घटनाक्रम संयोजनम्

प्र:1 अधोलिखितवाक्यानि क्रमराहतानि सन्ति। कथाक्रमं संयोजन कृत्वा लिखत–

(1)

(i) घटे जलम् अल्पम आसीत।

(ii) तस्य मस्तिष्क एकः विचारः समागतः।

(iii) एकः पिपासितः काकः आसीत्।

(iv) सः पाषाण खण्डानि घटे अक्षिपत, जलं च उपरि आगतम्।

(v) सः वने एक घटम अपश्यत्।

(vi) जलं पीत्वा काकः ततः अगच्छत।

उत्तरम्–

(i) एकः पिपासितः काकः आसीत।

(ii) सं वने एक घटम् अपश्यत्।

(iii) घटे जलम, अल्पम् आसीत्।

(iv) तस्य मस्तिष्क विचारः समागतः।

(v) सः पाषाणखण्डानि घटे अक्षिपत्, जलं च उपरि आगतम्।

(vi)जलं पीत्वा काकः ततः अगच्छत।

(2)

(i) मूषकः परिश्रमेण जालम अकृन्तत्।

(ii) एकदा सः जाले, बद्धः।

(iii) सिंहः जालात्, भूत्वाः मुक्त्वा मूषकं प्रशंसन् गतवान्।

(iv) एकस्मिन् वने एकः सिंहः वसति एम।

(v) सः सम्पूर्ण प्रयासम् अकरोत् परं बन्धनात् न मुक्तः।

(vi) तदा तस्य स्वर श्रुत्वा एकः मूषकः तत्र आगच्छत्।

उत्तरम्–

(i) एकस्मिन् वने एकः सिंहः वसति स्म।

(ii) एकदा सः जाले बद्धः।

(iii) सः सम्पूर्ण प्रयासम् अकरोत परं बन्धनात् न मुक्तः।

(iv) तदा तस्य स्वर श्रुत्वा एकः मूषकः तत्र आगच्छत्।

(v) मूषकः परिश्रमेण जालम् अकृन्तत।

(vi) सिंहः जालात् मुक्तः भूत्वा मूषकं प्रशंसन् गतवान्।

(3)

(i) तदा तस्य मुखस्था रोटिका अपि जले पतति।

(ii) एकदा कश्चित कुक्कुरः एका रोटिकां प्राप्नोत्।

(iii) तदाः सः नदीज ले स्वप्रतिबिम्बम अपश्यत्।

(iv) सः कुक्कुरः रोटिकां प्राप्तुम् तेन सह युद्धार्थम् मुखम् उद्धाटयात।

(v) स्वप्रतिबिम्बम् अन्यं कुक्कुरं मत्वा सः तस्य रौटिकां प्राप्तुम् अचिन्तयत्।

(vi) अत एव कथ्यते .'लोभः न करणीयः।'

उत्तरम्–

(i) एकदा कश्चित् कुक्कुरः रोटिकां प्राप्नोत्।

(ii) तदाः सः नदीजले स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत्।

(iii) रोटिकां प्राप्तुम अचिन्तयत्।

(iv) तदा तस्य प्राप्तुम् अचिन्यत्।

(v) तदा तस्य मुखस्था रोटिकां अपि जले पतति।

(vi) अत एवं कथ्यते 'लोभः न करणीयः।'

(4)

(i) एकः बुभुक्षितः श्रृंगालः भोजनार्थं वने, इतस्ततः भ्रमित स्म।

(ii) पर तथापि द्राक्षाफलानि न प्रोपोत्।

(iii) एकस्मिन् स्थाने सः दाक्षालतां पश्यति।

(iv) "एतानि द्राक्षाफलानि अम्लानि" इति उक्त्वा कुपितः श्ंगालः ततः गतः।

(v) तानि खादितं सः नैकवार प्रयासम् अकरोत्।

उत्तरम्–

(i) एकः बुभुक्षितः श्रृंगालः भौजनार्थं वने इतस्ततः भ्रमति स्म।

(ii) एकस्मिन स्थाने सः द्राक्षालतां पश्यति।

(iii) तानि, खादितु सः नैकवार प्रयासम् अकरोत्।

(iv) परं तथापि द्राक्षाफलानि न प्राप्नोत्।

(v) "एतानि द्राक्षाफलानि अम्लानि" इति उक्त्वा कुपितः श्रृंगालः ततः गतः।

(5)

(i) सः प्रतिदिनं बहून पशून हत्त्वा खादति स्म।

(ii) एकदा यदा शशकस्थ क्रमः आगतः, तस्य विलम्बागमनेन सिंहः कुपितः जातः।

(iii) सिंहः जले स्वप्रतिबिम्ब दृष्ट्वा तस्मिन कूपे अकूर्दत्।

(iv) कस्मिश्रित् वने एकः सिंहः वसति स्म।

(v) तदा सर्व पशवः विचारं, कृत्वा प्रतिदिन, सिंहस्य पार्श्वे भोजनार्थम् एकं पशुं प्रेषयितुम् निश्चितवानाः।

(vi) अतः लोके प्रसिद्ध 'प्रसिद्ध बुद्धिर्यस्य बल तस्य' इाति।

उत्तरम्–

(i) कस्मिंश्रित् वने एकः सिंहः वसति स्म।

(ii) सः प्रतिदिनं बहून् प्रशून् हत्त्वा खादति स्म।

(iii) तदा, सर्वे पशवः विचारं कृत्वा प्रतिदिनं सिंहस्य पार्श्वे भोजनार्थम् एकं पशुं प्रेषयितुं निश्चितवानाः।

(iv) एकदा यदा शशकस्य क्रम आगतः तस्य विलंब गमनेन हिंः कूपितः जातः।

(v) सिंहः जलं स्वप्रतिबिम्बं दृष्ट्वा तस्मिन् कूपे अकूर्दत्।

(vi) अतः लोके प्रसिदं 'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य' इति।

(6)

अद्योलिखितानि वाक्यानि क्रमरहितानि सान्ति। यथाक्रमं संयोजनं कृत्वा लिखत –

(i) अन्नतः एकस्मिन वटवृक्षात् मूले सः महाबोधम् अलभत्।

(ii) पर सः पूर्णशांतिं न अलभत्।

(iii) महात्मा बुधः एकस्यां रात्रों गृहं त्यक्त्वा निर्गतः।

(iv) एकदा सः पञ्चमित्रैः सह षड्वर्षपर्यन्तम् अतपात्।

(v) सः इतस्ततः वने अभ्रमत्।

(vi) तदारभ्यः सः बुद्धनाम्ना प्रख्यात अभवत्।

उत्तरम्–

(i) महात्मा बुधः एकस्यां रात्रौ गृहं व्यक्त्वा निर्गतः।

(ii) सः इतसातः वने अभ्रमत्।

(iii) एकदा सः पञ्चमित्रैः सह षड्वर्षपर्यन्तम् अत्तपत् ।

(iv) परं सः पूर्णशांतिं न अलभत्।

(v) अन्ततः एकस्मिन् वटवृक्षात् मुले सः महाबोधम् अलभत्।

(vi) तदारभ्यः सः बुद्धनाम्ना प्रख्यातः अभवत्।

अनुच्छेद लेखनम्

1. अधः मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि "वाटिकायाः शोभाविषये" लिखत–

(जलाशयः, वृक्षाः, पुष्पाणि, भ्रमरा, लताः, पक्षिणः, जनाः, प्रातः काले, भ्रमन्ति, क्रीडन्ति।)

उत्तरम् –

(i) इदं एकायाः वाटिकाया दृश्यम् अस्ति।

(ii) वाटिकायां अनेके वृक्षाः सन्ति।

(iii) अनेका लत्ताः अपि वाटिकायाः शोभां वर्धयान्ति।

(iv) लतासु हरितानि पत्राणि, विविध वर्ण पुष्पाणि च सन्ति।

(v) वृक्षेषु लतासु च पक्षिणः तिष्ठान्ति भ्रमराः पुष्पेणु विचरन्ति गुञ्जन्ति च।

(vi) वाटिकायां जनाः प्रातः काले सायंकाले च भ्रमन्ति क्रीडन्ति च।

2. अधः मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि "वाटिकायाः महत्त्वम्" इति विषये लिखत–

(मञ्जूषा– संस्कृतभाषा, संस्कृतिः, सङ्गणकस्य, भाषाजननी, वैदाः, वैज्ञानिकी।)

उत्तरम–

(i) संस्कृत भाषा संसारे प्राचीनत्तमा भाषा अस्ति।

(ii) एषा भाषा भारतस्य संस्कृति वहति।

(iii) संस्कृत भाषा सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी अस्ति।

(iv) भारतास्य ज्ञान निधिः वेदाः अपि अस्यामेव भाषायाम् विरचित्ता।

(v) एषा वैज्ञानिकी भाषा।

(vi) वैज्ञानिकाः कथयन्ति यत् एषा भाषा सङ्णकस्य प्रयोगार्थ सरलतमा भाषा।

3. अधः मन्जूषायां प्रदतूशब्दानां सहायताया संस्कृते षड् वाक्यानि 'विद्याधनः' इति विषये लिखत–

(मञ्जूषा– अतिमहत्वं, प्रतिष्ठां, कल्पलता, विद्यार्जनम, धर्माधर्म, सर्वधनं, पशुरेव, अभिलाषाः।)

शेखावाटी मिशन–100

उत्तरम्–

(i) विद्या धनं सर्वधनं प्रधानमस्ति।

(ii) विद्यया एव मानवस्य सर्वेषाम् पूर्यन्ते।

(iii) विद्यया एव धर्माधर्मस्य ज्ञानं भवति।

(iv) अस्मिन् समये विद्यायाः अति महत्वं वर्तते।

(v) विद्या विहीनस्तु मानवः तु साक्षात् पशूरिव वर्तते।

(vi) विद्यया एव मनुष्यः सर्वत्र प्रतिष्ठां प्राप्नोति।

(vii) विद्या वस्तुतः कल्पलतेव विद्यते।

(viii) आतोऽस्माभिः विद्यार्जनम् अवश्यमेव करणीयम्।

4. अधः मन्जूषायां, प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि 'परोपकारः', इति विषये लिखत–

(मञ्जूषा– संसारे, कल्याणं, दुःखं, पवित्रं, स्वार्थतत्पराः, परेषां, प्रतिष्ठा, परमो।)

उत्तरम्–

(i) संसारे प्राणिनाम् उपकारः परोपकारोऽस्ति।

(ii) परेषां उपकारेः एवं सगुणेः विद्यते येन मनुष्येष्ठ सुखस्य कल्याणं वर्तते।

(iii) परोपकारेण एव हृदयं पवित्रं सरलं सरसं च भवति।

(iv) सत्पुरुषाः कदापि स्वार्थ तत्पराः न भवान्ती।

(v) ते परेषां दुःखं स्वीयं दुःखं मत्वा तन्नाशाय यतन्ते।

(vi) जगतः प्रतिष्ठा परोपकारेणैव भवति।

(vii) अत एव कथ्यते 'परोपकारः' परमोधर्मः।

.5. अधः मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि 'सदाचारः' शति विषये लिखत।

(मञ्जूषा – सदाचारः, सर्वेषाम्, लोके, भूषणम्, कुर्वन्ति, समावेश, जने, अतः)

(i) अस्मिन् लोके सज्जना यथा आचरणं कुर्वन्ति तदवदेव आचरणं सदाचारः।

(ii) सदाचारे सर्वेषां गुणानां समावेशः भवति।

(iii) सुजनता वाक, संयमः विनयः धर्माचरणमिति सद्गुणाः सदाचारशीले जने प्रामुख्येन दृश्यन्ते।

(iv) अतः सदाचारः शीलं वा मानवस्थ परम भूषणं मन्यते।

शेखावाटी मिशन–100

प्रातः कालः

6. **भ्रमन्ति, क्रीडन्ति, गायन्ति, कूजन्ति, गच्छन्ति, तरन्ति, विचरन्ति, जनाः, खगाः, पशवः, बालाः, यत्र–तत्र, समयः, मनोहरः, उपवनेशु, मार्गेषु, सूर्योदयः, मीनाः**

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) प्रातःकालः अतीव मनोहरः भवति।

(ii) प्रातःकाले उपवनेषु जनाः भ्रमन्ति।

(iii) प्रातःकाले खगाः गायन्ति।

(iv) बालाः उपवनेषु क्रीडन्ति।

(v) प्रातःकाले मार्गेषु पशवः यत्र–तत्र विचरन्ति।

स्वस्थजीवनम्

7. **प्रतिदिनम्, सूर्योदयः, संतुलितः आहारः, नियमितः, व्यायामः, स्वास्थ्यवर्धकः, प्राक्**

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) स्वस्थजीवनाय प्रतिदिनं व्यायामः करणीयः।

(ii) स्वस्थजीवनाय सूर्योदयात् प्राक् शयनं त्यजनीयम्।

(iii) संतुलितः आहारः स्वास्थ्यवर्धकः भवति।

(iv) स्वस्थजीवनाय नियमितरूपेण भ्रमणं कर्त्तव्यम्।

(v) नियमितः आहारः विहारः च स्वस्थजीवनाय आवश्यकं भवति।

छात्रजीवनम्,

8. **अतीव, उत्तमं, प्रथमसोपानम्, साफल्यं, धनोपार्जम्, देश–सेवा, साक्षरः, परिश्रमेण विद्यार्जनम्**

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) छात्रजीवनं मानवजीवनस्य प्रथमसोपानम् अस्ति।

(ii) छात्रजीवने परिश्रमेण विद्यार्जनं करणीयम्।

(iii) छात्रजीवने एव छात्रः साक्षरः भवति।

(iv) विद्यार्जनं कृत्वा देश–सेवा कर्त्तव्या।

(v) छात्रजीवनस्य सदुपयोगेनैव जीवने साफल्यं प्राप्यते

मम सस्कृत–शिक्षकः

9. **व्यक्तित्वम्, अनुशासनप्रियः, आकर्षकम्, संस्कृत–शिक्षकः, सम्भाषणचतुरः, विनोदप्रियः, मधुरस्वरः, आदर्शः प्रार्थनासभायां, सौम्यं वेषं, परिश्रमी**

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) मम संस्कृत–शिक्षकः अनुशासनप्रियः अस्ति।

(ii) तस्य व्यक्तित्वम् आकर्षकम् अस्ति।

(iii) सः संस्कृते सम्भाषणचतुरः विनोदप्रियः च अस्ति।

(iv) सः अतीव परिश्रमी अस्ति।

(v) सः एकः आदर्शः शिक्षकः अस्ति।

प्रातः भ्रमणम्

10. **उद्यानम्, बालः, वृक्षाः, पादपाः, जनाः, प्रातःकाले, पुष्पम्, कन्दुकेन, भ्रमणाय, आनन्दाय, स्वास्थ्यम्**

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) अहं प्रतिदिनं प्रातःकाले भ्रमणाय गच्छामि।

(ii) प्रातःकाले बहवः जनाः भ्रमणाय उद्यानम् आगच्छन्ति।

(iii) प्रातःकाले भ्रमणेन स्वास्थ्यम् उत्तमं भवति।

(iv) प्रातःकाले उद्यानेषु बालाः कन्दुकेन क्रीडन्ति।

(v) प्रातःकाले भ्रमणम् आनन्दाय भवति।

11.शुद्धं पर्यावरणम्

वनस्पतयः, हरिताः, वृक्षाः, प्रकृतेः, प्रदूषणम्, आरोपणीयाः, जलशुद्धिः, नदीजलेषु अवकरः, वर्धमानम्, करणीयम्, क्षेपणीयः, संरक्षणम्

उत्तरम्–अनुच्छेदम्–

(i) मानवजीवनाय शुद्धं पर्यावरणम् आवश्यकम् अस्ति।

(ii) शुद्धपर्यावरणाय प्रकृतेः संरक्षणं करणीयम्।

(iii) नदीजलेषु अवकरः न क्षेपणीयः।

(iv) अस्माभिः वृक्षाः आरोपणीयाः।

(v) प्रदूषणेन बहवः रोगाः भवन्ति।

शेखावाटी मिशन–100

शेखावाटी मिशन–100

माध्यमिक परीक्षा 2026

नमूना प्रश्न–पत्र

विषय – संस्कृत

समय 3 घण्टे 15 मिनिट कक्षा – 10 पूर्णांक – 80

प्रः1 बहुविकल्पात्मक प्रश्ना :– (1x18=18)

(i) वाष्पयानमाला किं वितरन्ती संधावति ?

(अ) धूमम् (ब) ध्वानम् (स) जलम् (द) वस्त्रम्

(ii) सर्वकार्येषु सर्वदा का बलवति भवति ?

(अ) रीतिः (ब) संस्कृति (स) बुद्धिः (द) नतिः

(iii) बालभावात् शिवस्य मस्तके कः विराजते ?

(अ) लवः (ब) कुशः (स) हिमकरः (द) कृष्णनागः

(iv) कस्मिन् सुते मातु : अधिका कृपा भवति ?

(अ) सुन्दरसुते (ब) दुर्बले सुते (स) बलिष्ठे सुते (द) कनिष्ठे सुते

(v) उदयसमये अस्तसमये कः रक्त : भवति ?

(अ) चन्द्र : (ब) तारकः (स) सूर्य (द) ध्रूवतारक :

(vi) अनृतम् शब्दस्यार्थमस्ति ?

(अ) सत्यम् (ब) असत्यम् (स) परस्परम् (द) सामीप्यम्

(vii) कृशकाय : कः आसीत ?

(अ) न्यायाधीश : (ब) आरक्षी (स) रक्षापुरूष (द) अभियुक्तः

(viii) प्राणेभ्योऽपि किं रक्षेत ?

(अ) गृहम् (ब) पुत्रम् (स) सदाचारम् (द) धनम्

(ix) लोकेऽस्मिन चक्षुष्मन्तः के प्रकीर्तिताः ?

(अ) नृपा : (ब) चनिकाः (स) भुवका : (द) विद्वांसः

(x) कीदृशा : प्राणिन : भूकम्पेन निहन्यते ?

(अ) सम्पन्ना : (ब) विवशा : (स) सुखिनः (द) दुःखिनः

(xi) <u>धूमम् + मुञ्चति</u> इत्यस्य सन्धिपद किम् ?

(अ) धुमम् मुञ्चति (ब) धूमं मुञ्चति (स) धुमन मुञ्चति (द) घुममुञ्चति

(xii) एकैक : इत्यस्य सन्धिपदं किम् ?

(i) एकः + एक (ब) एकम् + एक : (स) एकै + एकः (द) एक + एकः

(xiii) यथाशक्ति इति पदे क : समास : ?

(अ) अव्ययीभाव समासः (ब) द्विगु समासः (स) कर्मधारय समासः (द) बहुव्रीहि समास

(xiv) समया इति पद योगे का विभक्तिः भवति ?

(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) पंचमी (द) तृतीया

(xv) अलं योगे का विभक्ति : भवति ?

(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) तृतीया (द) पञ्चमी

(xvi) अङ्गविकारे शब्दे का विभक्तिः भवति ?

(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (ग) तृतीया (द) चतुर्थी

(xvii) रूच् धातुयोगे का विभक्ति : भवति ?

(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) तृतीया (द) पञ्चमी

(xviii) 'मम पिता प्रातः (7:15).. वादने उतिष्ठति । अत्र समुचितसमयवाचकशब्दं किम् ?

(अ) सपादसप्त (ब) सार्धसप्त (स) पादोनसप्त (द) पादोनपंच

प्र:2 निर्देशानुसार रिक्तस्थानानि पूरयत – (1x6=6)

(i) .... धावकः मार्गे अपतत् । (धाव् + शत्)

(ii) इदं मधुरं दुग्धं .... । (पा + अनीयर)

(iii) नगरे .... वसति। (जन + तल्)

(iv) सा .... बालिका अस्ति । (चपल + टाप्)

(v) त्वम् .... गच्छसि ? (परितः / कुत्र)

(vi) छात्राः पुस्तकम् .... न शोभन्ते । (यदि / विना)

प्रः 3. अधोलिखित गद्यांश पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणी भवानिर्देश लिखित –

समाजे नियमानां पालनम् अनुशासनं भवति। जीवने अनुशासनस्य विशेषं महत्वं भवति। प्रत्येकस्मिन् पदे अनुशासनम् आवश्यकं भवति। अनुशासनम् विना किमपि कार्यं सफलं न भवति। छात्रेभ्यः अनुशासनम् व्यवस्थायै परमावश्यकमस्ति। अनुशासितः जनः सर्वेभ्यः प्रियः भवति। सामाजिकव्यवस्थायै अनुशासनमत्यन्तम् आवश्यकमस्ति्। यस्मिन् समाजे अनुशासनं न भवति तत्र सदैव कलहः भवति। शिक्षकस्य अनुशासने छात्राः निरन्तरम् उन्नतिपथे गच्छन्ति। प्रकृतिरपि ईश्वरस्य अनुशासने तिष्ठति। यः नरः पूर्णतया अनुशासनम् पालयति सः स्वजीवने सा सफलः भवति।

प्रश्नाः (क) एकपदेन उत्तरत।

(i) जीवने कस्य विशेष महत्त्वमस्ति ? (1x2 = 2)

(ii) शिक्षकस्य अनुशासने के उन्नतिपथे गच्छन्ति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(i) अनुशासनं किं भवति ? किमर्थञ्च अनुशासनमत्यन्तम् आवश्यकमस्ति? 2

(ii) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

(ग) भाषिककार्यम् –

(i) ''अनुशासनस्य विशेष महत्वं भवति'' इत्यत्र कर्तृपदं लिखत– (1x3 = 3)

(ii) ''अनुशासनम् आवश्यकं भवति'' इत्यत्र विशेष्यपद किम् ?

(iii) 'सः स्वजीवने .... अत्र 'सः' इति सर्वनामपदस्थाने संज्ञापदं किम् ?

खण्ड 'ब'

प्र:4 अधोलिखितयो : वाक्ययो अड्कानां स्थाने संस्कृतशब्देषु समयलेखनं करणीयम–

(i) अह प्रातः (7:30) .... विद्यालयं गच्छामि । 1

(ii) छात्राः प्रातः (10:00) ....भोजनं कुर्वन्ति । 1

प्र:5 वृक्षात् उपरि मयूरः तिष्ठति । इति वाक्य संशोधयत। 2

प्र:6. राम : विद्यालयं गच्छति । इति वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कृत्वा लिखत– 2

प्र:7 घनश्याम : इति पदस्य विग्रहं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत – 2

प्र:8 अधोलिखित श्लोकस्य हिन्दी भाषायां सप्रसंग भावार्थ लिखत– 2

सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ।
उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा ।।

प्र:9 अधोलिखित श्लोकस्य अन्वयं मंजूषात : पदानि चित्वा पुरयत– 2

अवक्रता यथा चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि।
तदेवाहु महात्मानः समत्वमिति तथ्यतः ।।

अन्वय : यथा (i) .... चिते तथा यदि (ii) ....भवेत् (iii) .... तथ्यतः तदेव (iv) .... इति आहु : ।

प्र:10 निम्नलिखितवाम्येषु रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माण कुरुत– (1x3= 3)

(i) व्याघ्रं दृष्ट्वा धूर्तः श्रृगालः अवदत् ।

(ii) अयम् अन्येभ्यो दुर्बलः ।

(iii) उभौ शवं चत्वरे स्थापितवन्तौ ।

प्र:11 ''विचित्र साक्षी'' इति पाठस्य सारं हिन्दीभाषायां लिखत ।/ बुद्धिर्वलवती सदा पाठस्य सारं। 3

प्र:12 अधोलिखित गद्यांश पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत–

आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम् । तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ । आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत् अभियुक्तश्च अतीव कृशकायः। भारतवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करम् आसीत् । स भारवेदनया क्रन्दति स्म । तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच– ''रे दुष्ट! तस्मिन् दिने त्वयाऽहं चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणाद् वारितः। इदानीं निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डम् लप्स्यसे'' इति प्रोच्य उच्चैः अहसत। यथाकथञ्चिद् उभौ शवमानीय एकस्मिन् चत्वरे स्थापितवन्तौ।

प्रश्नाः–(क) एकपदेन उत्तरत– 1

(i) कः सुपुष्टदेह : आसीत ?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत– 2

(i) आरक्षी किं प्रोच्य उच्चैः अहसत् ?

(ग) भाषिककार्यम्– (1x2=2)

(i) ''आदेश प्राप्त उभौ प्राचलताम्'' इत्यत्र कर्तृपदं लिखत ।

(ii) ''स्कन्धेन वहनं दुष्करम् आसीत।'' इत्यत्र विशेषणपदं किम् ?

अथवा

यद्यपि दैवः प्रकोपो भूकम्पो नाम, तस्योपशमनस्य न कोऽपि स्थिरोपायो दृश्यते। प्रकृति समक्षमद्यापि विज्ञानगर्वितो मानव : वामनकल्प एवं तथापि भूकम्परहस्यज्ञाः कथयन्ति यत् बहुभूमिकभवननिर्माणं न करणीयम्। तटबन्धं निर्माय बृहन्मात्रं नदीजलमपि नैकस्मिन् स्थले पुञ्जीकरणीयम् अन्यथा असन्तुलनवशाद् भूकम्पस्सम्भवति । वस्तुतः शान्तानि एवं पञ्चतत्त्वानि क्षितिजलपावकसमीरगगनानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां कल्पन्ते । अशान्तानि खलु तान्येव महाविनाशम् उपस्थापयन्ति ।

प्रश्ना :–(क) एकपदेन उत्तरं लिखत– 1

(i) किं नाम भूकम्प : ?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत– 2

(i) भूकम्पविशेषज्ञा : किं कथयन्ति ?

(ग) यथानिर्देशम् उत्तरं लिखत। (1x2=2)

(i) ''अशान्तानि महाविनाशम उपस्थापयन्ति'' इत्यत्र कर्तृपदं लिखत।

(ii) ''भूकम्पं सम्भवति'' इत्यत्र क्रियापदं लिखत ।

प्रः13 अधोलिखितं श्लोकं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देश लिखत–

कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति शतशकटीयानम् ।
वाष्पयानमाला संधावति वितरन्ती ध्वानम् ।।

शेखावाटी मिशन–100

यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः कठिनं संसरणम् । शुचि...।।

प्रश्ना– (क) एकपदेन उतरत – 1

(i) केषाम् अनन्ताः पङ्क्तयः सन्ति ?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) शतशकटीयानं कीदृशं धूमं मुञ्चति ? 2

(ग) भाषिककार्यम् –

(i) 'कज्जमलिनं धूमम्' अनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम् ? 1

(ii) 'वाष्पयानमाला' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम् ? 1

अथवा

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो,
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः ।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः,
करी च सिंहस्य बलं न मूषकः।।

प्रश्न): (क) एकपदेन उत्तरत –

कः गुणं वेत्ति ? 1

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

गजः कस्य बलं जानाति ? तथा निर्बलः किं न जानाति ? 2

(ग) भाषिककार्यमः–

(i) 'गुणी' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम् 1

(ii) 'गजः' इतिपदस्य श्लोके पर्यायपदं किमस्ति ? 1

प्रः14 अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत–

लवः – ननु भगवान् वाल्मीकि :।

रामः – केन सम्बन्धेन ?

लवः – उपनयनोपदेशेन ।

रामः – अहमत्रभवतो : जनकं नामतो वेदितुमिच्छामि ।

तवः – न हि जानाम्यस्य नामधेयम्। न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति ।

रामः – अहो माहात्म्यम् ।

कुशः – जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।

रामः – कथ्यताम् ।

कुशः – निरनक्रोशो नाम...

रामः – वयस्य, अपूर्व खलु नामधेयम् ।

विदूषकः – (विचिन्त्य) एवं तावत् पृच्छामि निरनुक्रोश इति क एवं भणति ?

कुशः – अम्बा।

विदूषक : – किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था?

कुशः – यद्यावयोर्बाल भावजनितं कञ्चिदविनयं पश्यति तदा एवम् अधिक्षिपतिनिरनुक्रो पुत्रौ, मा चापलम् इति ।

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत –

जनक नामतो वेदितुमिच्छामि इति कः वदति ? 1

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

''अहो महात्म्यम्'' इति श्रुत्वा कुशः किं वदति ? 2

(ग) भाषिककार्यम् –

(i) ''भवतो : जनके नामतो वेदितुमिच्छामि।'' वाक्येऽस्मिन् सर्वनामपदं किम् ? 1

(ii) "अस्मिन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति।" इत्यत्र विशेष्यपद किम् ? 1

अथवा

(एतस्मिन्नेव काले व्याघ्रचित्रकौ अपि नदीजलं पातुमागतौ एतं विवाद श्रृणुतः वदत : च)

व्याघ्रचित्रकौ – अरे किं वनराजपदाय सुपात्रं चीयते ?

एतदर्थं तु आवामेव योग्यौ । यस्य कस्यापि चयनं कुर्वन्तु सर्वसम्मत्या

सिंहः –तुष्णीं भव भोः। युवामपि मत्सदृशौ भक्षकौ न तु रक्षको। एते वन्यजीवा : भक्षकं रक्षकपदयोग्यं न मन्यन्ते अतएव विचारविमर्शः प्रचलति ।

बकः – सर्वथा सम्यगुक्तम् सिंहमहोदयेन । वस्तुतः एव सिंहने बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम् परमधुना तु कोऽपि पक्षी एव राजेति निश्वेतव्यम् अत्र संशीतिलेशस्यापि अवकाशः एवं नास्ति ।

प्रश्ना : (क) एकपदेन उत्तरत –

नदीजले पातुं को आगतौ ? 1

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत् –

वन्यजीवा : कम् रक्षकपदयोग्यं न मन्यते ? बकानुसारेण अधुना किं निश्चेतव्यम् ? 2

(ग) भाषिककार्यम् –

शेखावाटी मिशन–100

(i) 'आवामेव योग्यौ।' अत्र 'आवाम्' सर्वनामपद काम्यां प्रयुक्तम् ? 1

(ii) 'मन्यन्ते' इति क्रियायाः कर्तृपद किम् ? 1

प्रः15 भवान् राजकीय – उच्चमाध्यमिक – विद्यालय – गोविन्दनगरस्य दशम्याः कक्षायाः छात्रः कृष्णः अस्ति भवतः भगिनीविवाह : अस्ति अतः स्व प्रधानाचार्याय दिनद्वयस्य अवकाशार्थ प्रार्थनापत्रं लिखतु । 4

अथवा

भवतः नगरस्य उद्याने स्वच्छता नास्ति, बालक्रीडायाः साधनानि अपि न सन्ति ।

अतः व्यवस्थायाः कृते नगर पालिकाध्यक्षाय पत्र मञ्जूषायाः उचितंपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पुरयतु–

(मनांसि, निवेदनम्, परिक्षेत्रे, नगरपालिकाध्यक्ष, नगरस्य, कृपया, कर्मकरान, सन्ति)

सेवायाम्

(i) ....

नगरपालिका

जयनगरम्

विषय :– नगरस्य उद्याने स्वच्छता – बालक्रीडायाः साधनानि इति क्रमे।

महोदये!

(ii) .... अस्ति यत् अस्माकं उद्यानस्थ (iii) .... उद्यानस्य (iv) .... स्वच्छता नास्ति। तत्र बालक्रीडार्थ क्रीडकानि अपि न (v) .... क्रीडां विना अस्माकं (vi) .... न रमन्ते अतः (vii) ....स्वच्छतायाः समुचित – व्यववस्थायै (viii) .... आदिश्यन्तु

सधन्वादम्

प्रार्थी

महेशः

बी–3/76

पुष्पविहारम्

जयनगरम

प्रः16. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन अष्टवाक्यानि निर्माय लिखत – 4

वृक्षाः, वहति, हरिणाः, पिबन्ति,

तडाग : कमलानि, सुगन्धः, खादति

अथवा

मञ्जूषायाः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा गुरुशिष्ययोः मध्ये क्रीडाया : विषचे संवाद पुरयत–

(अध्ययनम्, क्रीडने, बहुलाभम् आवश्यकता, अधूना, करोषि, क्रीडाङ्गणे, क्रीडायै)

अध्यापकः – प्रवीण। त्वम् अत्र किं .... ?

प्रवीण : – हे गुरो ! अहम् ....किमपि न करोमि ।

अध्यापकः – तर्हि गच्छ । तव मित्राणि तत्र .... क्रीडन्ति, तैः सह क्रीड ।

प्रवीण : – मम .... रुचि : नास्ति। अतः अहं न क्रीडामि ।

अध्यापकः – स्वस्थशरीरस्य स्वस्थमनस : च कृते क्रीडायाः अस्माकं जीवने महती ....भवति ।

प्रवीणः – यदि अहं क्रीडायां ध्यान दास्यामि तर्हि मम...................... बाधितं भविष्यति ।

अध्यापकः – एतद् समीचीनं नास्ति । क्रीडायै स्वलपसमयम् एव प्रयच्छ। अल्पसमय : अपि शरीराय .... प्रदास्यति ।

प्रवीणः – बाढ़म् श्रीमान् ! इतः आरभ्यं अहं कञ्चित् समयं .... अपि दास्यामि

प्रः17 अधोविखितेषु वाक्येषु केषाञ्चन चतुर्णा वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं करोतु– 4

(i) राधा भोजन पकाती है।

(ii) गाँव के चारों ओर खेत हैं।

(iii) जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् हैं।

(iv) हिमालय से गंगा निकलती है।

(v) हम दोनों जल पीते हैं।

(vi) जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है।

प्रः18 क्रमरहितानां षड्वाक्यानां क्रमपूर्वकं संयोजनं कुरूत– 3

(i) मूषकः परिश्रमेण जालम् अकृन्तत् ।

(ii) एकदा सः जाले बद्धः ।

(iii) सिंहः जालात् –मुक्तः भूत्वा मूषकं प्रशंसन् गतवान् ।

(iv) एकस्मिन् वने एकः सिंह वसति स्म।

(v) सः सम्पूर्ण प्रयासम् अकरोत परं बन्धनात् न मुक्तः।

(vi) तदा तस्य स्वरं श्रुत्वा एकः मूषकः तत्र आगच्छत् ।

अथवा

मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया ''सत्संगति' इति विषये षट् –संस्कृत वाक्येषु एकं अनुच्छेद लिखत।

(सतां सङ्गतिः, मानव–जीवने, यशं सुखं च, दोष निवारणः, विचारधारा, गुणयुक्त)

माध्यमिक परीक्षा, 2026

नमूना प्रशन–पत्र

विषय – संस्कृतम् (तृतीयभाषा)

कक्षा – 10 (दशमी)

समयः 3 घण्टे 15 मिनम् (सपादहोरातृयम) खण्ड–अ पूर्णांक – 80

प्र:1 बहुविकल्पात्मकप्रश्नाः – (1x18 = 18)

(i) अनिशं कालायसचक्रं कुत्र प्रचलति ?

(अ) महासागरमध्ये (ब) महानगरमध्ये (स) ब्रजवाटिकामध्ये (द) महावनमध्ये

(ii) राजपुत्रः नाम किम् आसीत ?

(अ) युवराजसिंहः (ब) ऋषिराजसिंहः (स) राजसिंहः (द) रामसिंहः

(iii) लवकुशयोः गुरोः नाम किम् आसीत् ?

(अ) दौणाचार्यः (ब) वाल्मिकी : (स) कालीदासः (द) वेदव्यासः

(iv) दुर्बल : वृषभः कुत्र पपात ?

(अ) वने (ब) क्षेत्रे (स) गृहे (द) ग्रामे

(v) सर्वष्वपत्येषु जननी कीदृशी भवति ?

(अ) प्रसन्ना (ब) असमम् (स) तुल्यवत्सला (द) कातरा

(vi) सम्पतौ विपतौ च केषाम् एकरूपता भवति ?

(अ) बालकानाम् (ब) धनिकानाम (स) बलीनाम् (द) महताम्

(vii) गुणी गुणं <u>वेति</u>। रेखाङ्कितपदस्य प्रसग्गानुसारं कोऽर्थः ?

(अ) जानाति (ब) याति (स) करोति (द) गच्छति

(viii) अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत् अत रेखाङ्कितपदस्य प्रसंग्गानुसारं कोऽर्थः ?

(अ) असत्यं (ब) सत्यम् (स) मधुरम् (द) अनर्गलम्

(ix) एक + एकः इत्यस्य सन्धिपदं किम् ?

(अ) एकेकः (ब) एकाएक (स) एकैकः (द) एकएकं

(x) 'इत्यात्मानम्' इत्यस्य सन्धिविच्छेदोऽस्ति –

(अ) इति + आत्मानम् (ब) इति + आत्मनम् (स) इती + आत्मानम् (द) इति+यात्मानम्

(xi) जश्त्वसन्धेः उदाहरणमस्ति–

(अ) सच्चरित्तम (ब) कोऽपि (स) इष्टः (द) जगदीशः

(xii) <u>'यथाशक्ति'</u> इति पदे कः समासः?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) कर्मधारयः (ब) बहुव्रीहि (स) द्वन्द्व (द) तत्पुरुष

(xiii) 'अभितः' इति पदयोगे का विभक्तिः भवति ?

(अ) प्रथमा (ब) द्वितिया (स) तृतीया (द) चतुर्थी

(xiv) 'क्रुध' धातुयोगे का विभक्तिः भवति ?

(अ) द्वितिया (ब) तृतीया (स) चतुर्थी (द) पंचमी

(xv) 'नमः' शब्दे का विभक्तिः भवति?

(अ) सप्तमी (ब) पंचमी (स) चतुर्थी (द) प्रथमा

(xvi) .... श्लोकः पठ्यते। अत्र पूरणीयं समुचितपदं किम् ?

(अ) अहम् (ब) माम् (स) आवाम् (द) मया

(xvii) प्रियंका (9.30) .... वादने विद्यालयं गच्छति। अत्र समुचितसमयवाचकशब्दं किम ?

(अ) सार्धनव (ब) सपादनव (स) सार्धदश (द) पादोनदश

(xviii) ''बालकौ गृहं गच्छति''। रेखाङ्किकतपदस्य शुद्धरूपं किम् ?

(अ) बालकाः (ब) बालकः (स) बालकान (द) बालकैः

प्रः2 निर्देशानुसार रिक्तस्थानानि पूरयत– (1x6 = 6)

(i) गुरुः सर्वदा .... भवति । (पूज + अनीयर्)

(ii) युवराजः .... बालः अस्ति। (बुद्धिः + मतुप्)

(iii) लोके .... दुर्लभम् । (नर+त्व)

(iv) अहम् .... सुजानपुराम् गमिष्यामि (श्वः / ह्यः / अधः)

(v) सर्वेष्वपत्येषु जननी तुल्यजत्सला ....। (इव, एव, इति)

(vi) क्रुद्धः सिंह .... धावति। (अधुना / इति / इतस्ततः)

प्रः3 अधोलिखितं अपठित गद्यांश पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानां उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत –

परेषाम् उपकारः परोपकारः उच्यते । ''सर्वः स्वार्थ समीहते ''इत्यपि कस्यचित् कवेः उक्तिः अस्ति । स्वार्थाय सर्वेऽपि प्राणिनः जीवन्ति । किन्तु यस्य जीवनम् अन्तेभ्यः अस्ति, अपरेषां प्राणीनां सुखाय यः प्रयतते, कष्टं सहते च वस्तुतः तस्यैव जीवनं सार्थकम् अस्ति, पश्य, गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति, अतः जनाः ''मातर'' इति वदन्ति । नदी अपि स्वजलं स्व्यं न पिबति, अन्येषां प्राणिनां कृते ददाति । मेधान पश्यत । स्वजलं सर्वेभ्यः वितरन्ति । पुष्पाणि सर्वेभ्यः सुगन्धं वितरन्ति । वृक्षाः फलानि प्रयच्छन्ति। मातृसमा उपकारिणी का विद्यते जगति ? अतः स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम्।

प्रश्नाः (क) एकपदेन उत्तरत । (1x2=2)

(i) सर्वे किं समीहन्ते (ii) काः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) कस्य जीवनं सार्थकम् अस्ति ? 2

(ii) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षक लिखत । 1

(ग) भाषिक कार्यम् – (1x3 =3)

(i) गावः इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किमस्ति ?

(ii) 'ते स्वजलं सर्वेभ्यः वितरन्ति' – इत्यत्र 'ते' इति सर्वनाम पदस्थाने संज्ञापदं लिखत ।

(iii) 'प्राणिनाम्' इति विशेष्यपदस्य गद्यांशे विशेषणपदं किम् ?

खण्ड ब

प्र:4 अधोलिखितयोः वाक्ययोः अङ्कानां स्थाने संस्कृतशब्देषु समयलेखनं करणीयम । (1x2=2)

(i) जितेन्द्र : सायं (4.15) .... वादने भ्रमणाय गच्छति ।

(ii) अनुरागः रात्रौ (8.45) .... वादने शयनं करोति ।

प्र:5 'उमेशः कलमम् पत्र लिखति' इति वाक्यं संशोधयत । 2

प्र:6 छात्रः ग्रन्थं पठति। इति वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कृत्वा लिखत। 2

प्र:7 यथाशक्ति इति पदस्य विग्रहं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत । 2

प्र:8 अधोलिखित श्लोकस्य हिन्दीभाषायां सप्रसङ्ग भावार्थ लिखत । 2

गुणी गुणं वेति न वेत्ति निर्गुणो,
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्वलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः,
करी च सिंहस्य बलं न मूषक :।।

प्र:9 अधोलिखितश्लोकस्य अन्व्यं मंजूषातः पदानि चित्वा पूरयत – 2

पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याधनं महत्।
पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्तिस्तत्कृतज्ञता।।

अन्व्यः – पिता (i) .... बाल्ये महत् (ii) .... यच्छति

अस्य (iii) .... किं तपः तेपे इत्युक्ति (iv) ....

(विद्याधनम् पिता, पुत्राय, तत्कृतज्ञता)

खण्ड–स

प्र:10 निम्नलिखित वाक्येषु रेखांकित पदमाधृत्य प्रश्न निर्माणं कुरुत– (1x3=3)

(i) धैर्यवान् <u>लोके</u> परिभवं न प्राप्नोति ।

(ii) <u>भूकम्पस्य</u> दारुण–विभीषिका कच्छजनपदं ध्वंसावशेष परिवर्तितवती ।

(iii) मालाकार : तोयैः तरोः पुष्टिं करोति ।

प्र:11 विचित्रः साक्षी'' इति पाठस्य सारं हिन्दीभाषायां लिखत। 3

अथवा

जननी तुल्य वत्सला इति पाठस्य सारं हिन्दीभाषायां लिखत।

प्र:12 अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम उत्तराणि यथा निर्देश लिखत–

आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्। तत्रोपेत्य काष्टपटले निहितं पटाच्छादित देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ। आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत अभियुक्तश्च अतीव कृशकायः। भारवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करम् आसीत। स भारवेदनया क्रन्दति स्म। तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच– ''रे दुष्ट! तस्मिन दिने त्वयाऽहं चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणाद वारितः । इदानीम निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे'' इति प्रोच्य उच्चैः अहसत् । यथाकथञ्चिद् उभौ शवमानीय एकस्मिन चत्वरे स्थापितवन्तौ।

प्रश्नाः (क) एकपदेन उत्तरत –

(i) कः सुपुष्टदेहः आसीत् ? 1

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

आरक्षी किं प्रोच्य उच्चैः अहसत् ? 2

(ग) भाषिक कार्यम– (1x2=2)

(i) ''आदेश प्राप्त उभौ प्राचलताम्'' इत्यत्र कर्तृपदं लिखत ।

(ii) ''स्कन्धेन वहनं दुष्करम् आसीत्''। इत्यत्र विशेषणपंद किम् ?

अथवा

एकोतर द्विसहस्त्रखीष्टाबदे (2001 ईस्वीये वर्षे) गणतन्त्र दिवस–पर्वणि यदा समग्रमपि भारत राष्ट्र नृत्य–गीतवादित्राणाम् उल्लासे मग्नमासीत् तदाकस्मादेव गुर्जर–राज्यं पर्याकुलं, विपर्यस्तम्, क्रन्दनविकलं, विपन्नञ्च जातम्। भूकम्पस्य दारुण – विभीषिका समस्तमपि गुर्जर क्षेत्रं विशेषेण च कच्छजनपद ध्वसावशेषु परिवर्तितवती। भूकम्पस्य केन्द्रभूतं भुजनगरं तु मृत्तिका क्रीडनकमिव खण्डखण्डम जातम्। बहुभूमिकानि भवनानि क्षणेनैव धराशायीनि जातानि। उत्खाता विद्युतद्वीप स्तम्भाः। विशीर्णा : गृहसोपान – मार्गाः । फालद्ये विभक्ता भूमिः । भूमि गर्भादुपरि निस्सरन्तीभिः दुर्वार जलधाराभिः – महाप्लावनदृश्यम् उपस्थितम्। सहस्त्रमिताः प्राणिनस्तु क्षणेनैव मृताः । ध्वस्तभवनेषु सम्पीडिता सहस्त्रशोऽन्ये सहायतार्थ कुरुणकरूणं क्रन्दन्ति स्म । हा दैव । श्रुत्क्षामकण्ठा : मृत प्रायाः केचन शिशवस्तु ईश्वरकृपया एव द्वित्राणि दिनानि जीवनं धारितवन्तः ।

प्रश्नाः (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कस्मिन पर्वणि समग्रमपि भारतम् उल्लासे मग्नमासीत् ? 1

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) भूकम्पस्य केन्द्रभूतं भुजनगरं तु कीदृशं जातम्? तथा कति प्राणिनस्तु क्षणेनैव मृताः? 2

(ग) भाषिक कार्यम्– (1x2=2)

(i) 'केचन शिशवः' – इत्यस्य क्रियापदं किम् ?

(ii) 'बहुभूमिकानि' इति विशेषणस्य विशेष्यपदं किम् ?

प्रः13 अघोलिखितं श्लोकं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथा निर्देशं लिखत –– 3

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्यो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ।।

प्रश्नाः (क) एकपदेन उत्तरत–

मनुष्याणां शरीरस्यः महान् शत्रुः कः? 1

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

किम् कृत्वा जनः कदापि दुःखं न अनुभवति ? 2

(ग) भाषिक कार्यम – (1x2=2)

(i). 'कृत्वा यं नावसीदति – अत्र 'यम' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

(ii). 'शत्रुः' इति, पदस्य पर्यायपदं किमस्ति ?

अथवा

विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम ।
अश्वश्चेद धावने वीर : भारस्य वहने खरः ।।

प्रश्नाः (क) एकपदेन उत्तरत : –

(i) भारस्य वहने कः वीरः अस्ति ? 1

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

कुत्र किञ्चिनिर्थकम् नास्ति ? 2

(ग) भाषिक कार्यम– (1x2=2)

(i) 'संसारे' इति विशेष्यपदस्य विशेषणपदं किम् ?

(ii) <u>सार्थकम</u> इत्यस्य श्लोके विलोमपदं किम् ?

प्रः14 अधोलिखितं नाट्यांश पठित्वा एतदधारितप्रश्नानां उत्तराणि यथा निर्देश लिखत–

उभौ – (अनिच्छां नाट्यतः) राजन्!
अलमति दाक्षिण्येन ।

रामः – अलमतिदाक्षिण्येन।
भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद्

शेखावाटी मिशन–100

गुण महतामपि लालनीय एव।

व्रजति हिमकरोऽपि बालभावात्

पशुपति–मस्तक केतकच्छदत्वम् ।।

रामः – एष भवतो : सौन्दर्यावलोकजनितेन कौतुहलेन पृच्छामि–

क्षत्रियकुलपितामहयो : सूर्यचन्द्रयोः को वा भवतो वंशस्य कर्ता?

लवः – भगवन् सहस्त्रदीधितिः ।

प्रश्नाः (क) एकपदेन उत्तरत–

कः पशुपति–मस्तक – केतकच्छदत्वं व्रजति ? 1

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

गुण महतामपि कस्मात् शिशुजन : लालनीय : एव भवति ? 2

(ग) भाषिक कार्यम – (1x2 = 2)

(i) को वा भवतोर्वंशस्यकर्ता' अत्र भवतोः सर्वनामपदस्थाने संज्ञापदंकिम्?

(ii) 'व्रजति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

अथवा

अन्यः वानरः किं न श्रुता त्वया पञ्चतन्त्रोक्ति : –

यो न रक्षति वित्रस्तान् पीड्यमानान्परैः सदा।

जन्तून् पार्थिवरूपेण स कृतान्तो न संशयः ।।

काकः– आम् सत्यं कथितं त्वया – वस्तुतः वनराज, भवितं तू अहमेव योग्यः।

पिकः– (उपहसन्) कथं त्वं योग्य : वनराज : भवितुं, यत्र तत्र का–का इति कर्कशध्वनिना वातावरणमाकुलीकरोषि। न रूपं न ध्वनिरस्ति।

कृष्णवर्ण, मेध्यामेध्य भक्षकं त्वां कथं वनराजं मन्यामहे वयम ?

प्रश्नाः (क) एकपदेन उत्तरत– 1

वनराज : भवितुं कः स्वयं योग्यं मनुते ?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत– 2

काकः केन वातावरणमाकुलीकरोति ?

(ग) भाषिक कार्यम् – (1x2=2)

(i) 'सत्यं कथम् त्वया' अत्र 'त्वया'। सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ii) 'योग्यः वनराजः' इत्यत्र विशेष्यपद किम ?

प्रः15 भवान् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फतेहपुरस्य दशमकक्षायाः छात्रः मूलचन्द अस्ति। भवतः पिता अतीव निर्धनः अस्ति। स्वस्य प्रधानाचार्य शुल्क मुक्त्यर्थम एकं प्रार्थनापत्रं लिखतु। 4

अथवा

भवान दिनेशः। स्वकीय मित्रं कृष्णराजम् प्रति स्वविद्यालयस्य वार्षिकत्सवविषये अधोलिखितपत्रं मंजूषापदसहातया पूरियित्वा लिखतु–

(परिवारे, वार्षिकत्सवस्य, पत्रोतरं, स्वकरकमलेन, कुशलताम् विविधाः स्वीकृतवान, पुरस्कारम्)

रामपुरतः

दिनांकाः 19.12.2025

प्रियमित्र कृष्णराज!

नमस्ते।

अत, अहं कुशलं, भवतः ....कामये। फरवरी मासे पञ्चमे दिनांके मम विद्यालये ....आयोजनम् अभवन्। अस्मिन दिवसे ....प्रतियोगिताः अभवन। अहमपि धावन प्रतियोगितायाँ, वादविवादप्रतियोगितायाम् च भागं .... पुरस्कार वितरण समारोहे अस्माकं क्षेत्रस्य विधायकमहोदयः....................... पुरस्कारवितरणं कृतवान अहमपि ....प्राप्तवान् ।

अस्तु .... सर्वेभ्यः यथायोग्यं नमस्काराः ....शीघ्रमेव प्रेषणीयम्।

भवतः मित्रम्

दिनेशः

प्रः16 अधः प्रदत चितं दृष्टवा मञ्जूषायां प्रदत शब्दानां सहायतया संस्कृतेन अष्ट वाक्यानि निर्माय लिखत– 4

(वर्षा, मम, मेद्यः, छत्रम् गर्ज, नीडे, विद्यालय : पक्षिशावकः, वृक्षाः, जलमयम्)

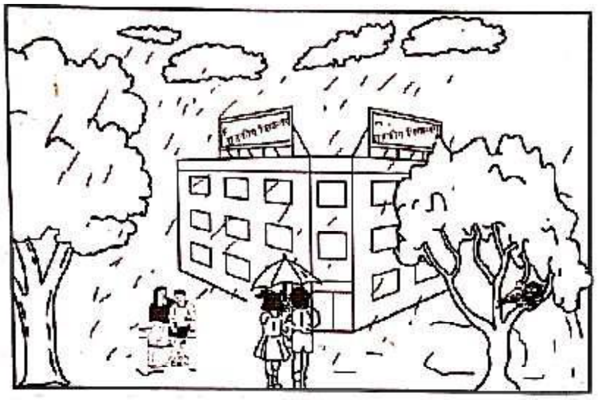

अथवा

मञ्जूषायां प्रदतशब्दानां सहायतया माता पुत्रयोः मध्ये संवाद पूरयतु–

(वस्तुनि, आपणं, सायंकाले, विद्यालयस्य, मातुलः भोजनं, त्वं)

माता– राघव ! .... किं करोषि ?

राघव – अहम् मम .... गृह–कार्य करोमि ।

माता – पुत्र ! गृहकार्यानन्तरम .... गत्वा ततः दुग्धं शाकफलानि च आनय ।

राघव – अहं .... पुस्तकम् क्रेतुम् आपणं गमिष्यामि तदा दुग्धं शाकफलानि च आनेष्यामि

माता–सायंकाले ना, त्व तु पूर्वमेव गत्वा आनय ।

राघव –शीघ्रं किमर्थम् ?

माता – अद्य त्व .... आगमिष्यति, अतः ....समयात पूर्वमेव पक्ष्यामि ।

राघव – मातुल : आगमिष्यति चेत् अहम् इदानीम् एव गत्वा .... क्रीत्वा आगच्छामि ।

प्रः17 अघोलिखितेषु वाक्येषु केषांचन चतुर्णां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवाद कुरुत– 4

(i) नगर के चारों ओर वृक्ष हैं।

(ii) राधा बस के द्वारा विद्यालय जाती है।

(iii) वृक्ष के ऊपर बन्दर है ।

(iv) हनुमान जी को नमस्कार ।

(v) मैं सोहन के साथ पढता हूँ।

(vi) वह मेरी कक्षा में पढ़ता है।

प्रः18 अधोलिखित वाक्यानि क्रम रहितानि सन्ति। यथा क्रम संयोजन कृत्वा लिखत। 3

(i) घंटे जलम् अल्पम् आसीत् ।

(ii) तस्य मस्तिष्के एक : विचारः समागतः ।

(iii) एकः पिपासित : काक : आसीत् ।

(iv) सः पाषाणखण्डानि घंटे अक्षिपत्, जलं च उपरि आगतम् ।

(v) सः वने एकं घटम् अपश्यत् ।

(vi) जलं पीत्वा काकः ततः अगच्छत् ।

अथवा

अद्यः मञ्जूषायां प्रदत शब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड् वाक्यानि 'अस्माकम् देशस्य विषये' लिखत–

(विविधा भाषा, वेशभूषा, उत्सवाः, पर्वत श्रृंखलाः, कुत्रचित् नद्यः राष्ट्रगानं गौरवम्, स्वाधीन देशः, , जनतन्त्रम्, विकसितम्, राष्ट्रम्)